चन्दामामा
मार्च १९८९

डायमंड कामिक्स में
400 वां अंक
जिसका इंतजार था – कार्टूनिस्ट प्राण का
चाचा चौधरी राका से मुठभेड़
खूंखार राका फिर आ रहा है। उसने वैद्यराज चक्रमाचार्य की अद्भुत दवाई पी रखी है, जिससे वह मर नहीं सकता। उसके अत्याचार और तबाही से चारों तरफ कोहराम मचा है। कम्प्यूटर से तेज दिमाग वाले चाचा चौधरी और शक्तिशाली साबू के सामने राका एक चुनौती बनकर खड़ा है।
प्राण
चाचा चौधरी और राका से मुठभेड़
मोटू पतलू और शौकिया होटल
अंकुर और विदेशी कार
महाबली शाका और पाताल दानव
पलटू और डाकू दमकिलम
डायमंड मिनी कामिक्स
मोटू छोटू और गले पड़ी मुसीबत
ताऊ जी और
विक्रम बेताल और परोपकार कितना
महाबली शाका और शहर का शैतान
डायमंड कामिक्स प्रा. लि.
2715, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
डायमंड कामिक्स डाइजेस्ट में
दशावतार 12.00 सम्पू मोटू–V 12.00
चाचा चौधरी V112.00 महाबली शाका III 12.00
नई बाल पॉकेट बुक्स
रहस्य और रोमांच से भरपूर पॉकेट बुक्स
चाचा चौधरी और श्री डब्लू 3.00
बिल्लू और बुलबुल का बाग 3.00
पलटू और जादूगर योगी 3.00
पिंकलू और जंगल के शैतान 3.00
मीकू और बंदर का ज्योतिष 3.00
महाबली शाका और कबीलों का दुश्मन 3.00
मोटू पतलू और जादूगर काला मुंडा 3.00
फौलादी सिंह और सुपर क्वीन 3.00

चन्दामामा

मार्च 1989

★

विषय-सूची

★

एक प्रति : ३-००

वार्षिक चन्दा : ३६-००

LIVE THE ADVENTURE!
G.I. JOE
INTERNATIONAL HEROES
ARE HERE!
Now! Start a real battle in your backyard between the good guys and the villains.
GI JOE International Heroes and Cobra Terrorists are available at your nearest toy shop. Collect your own miniature, fully poseable army figures. Then add all their weapons, missiles, tanks and armoured cars.
Hurry! Get there before your friends get you!
• GI JOE TOYS
• COMICS
• VIDEO CASSETTES
Manufactured by Funskool (India) Ltd. a subsidiary of MRF Limited, in collaboration with Hasbro Inc., U.S.A.
FUNSKOOL
Rediffusion/FS/7331c

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी

कतिपय अन्धविश्वासों के पीछे पंडित और पामर सभी समान रूप से पागल हो जाते हैं । वे ऐसे विश्वास होते हैं कि जिनके पीछे कोई आधार नहीं होता । इसका प्रमुख कारण यह है कि ये विश्वास केवल अत्यन्त प्राचीन ही नहीं हैं, बल्कि इनके आधार पर संप्रदाय भी स्थापित हुए हैं । "राजा के सपने" नामक कहानी से इसी सत्य का बोध होगा ।

अमरवाणी

अजरामरवत् प्राज्ञो, विद्यामर्थं च चिन्तयेत् ।
गृहीत्त इव केशेम, मृत्युना धर्ममाचरेत् ॥

[विवेकशील व्यक्तियों को इस इच्छा से विद्या रूपी संपत्ति का संपादन करना चाहिये कि उन्हें इससे जरा व मरण प्राप्त नहीं होंगे । उनको इस प्रकार दृढ़चित्त से धर्ममार्ग का आचरण करना चाहिये कि मृत्यु सदा ही सर पर सवार रहती है ।]

वर्ष : ४१ मार्च १९८९ अंक : ७

एक प्रति : ३.०० वार्षिक चन्दा - ३६.००

जेम्स बॉन्ड के धमाकेदार कारनामें

चन्दामामा के सम्वाद

पुष्पक विमान

इटली के वैज्ञानिक डा. रोबर्टो पिनोटी का विचार है कि हमारे पुराणों में वर्णित पुष्पक विमान केवल कवियों की कल्पना मात्र नहीं है, बल्कि सत्य बात है । हालही में बेंगलोर में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय व्योम - विज्ञान - संगोष्ठि में भाषण देते हुए उन्होंने यह विचार व्यक्त किया है कि, हमारे प्राचीन ग्रन्थों का परिशीलन करने से पुष्पक विमान संबंधी विज्ञान प्रकाश में आ सकता है ।

आकाश में प्रकाश वृत्त

इसवी सन २००० तक हम लोग आकाश में वलयाकृति एक विशाल प्रकाश वृत्त देखते जा रहे हैं । नये सहस्राब्द में प्रवेश करते समय एकता, परिपूर्णता और शान्ति के रूप में इस प्रकाश वृत्त का आविर्भाव किया जा रहा है ।

मंगल-ग्रह में मानव

ई. सन २००१-२०१० के मध्यकाल में अमेरिका मंगलग्रह पर मनुष्यों को भेजनेवाला है ।

अद्भुत् मेधा - संपत्ति

गणित के विश्वविख्यात विद्वान प्रोफेसर अर्नो रुबिक द्वारा तैयार की गयी समस्याओं तथा पहेलियों को ग्यारह वर्षीय समीर मेहरा और उसकी बहन नौ वर्षीय कनिका ने बड़ी सरलता से हल किया है । इन पहेलियों की सृष्टि करनेवाले प्रोफेसर साहब को उनके सही हल खोजने में बहुत समय लगा था । ऐसी समस्याओं को समीर ने केवल २५ सेकण्डों में तथा कनिका ने दो मिनटों में हल कर दिया है ।

कर वसूली

रामापुर तथा विष्णुपुर वैसे पड़ोस गाँव थे । फिर भी वे दोनों गाँव दो भिन्न राज्यों से संबंधित थे । उन दोनों गाँवों की सीमाओं पर दोनों राज्यों के अधिकारी व्यापारियों से सीमा शुल्क वसूल किया करते थे । अधिकारी लोग माल लदी गाड़ियों को गिनकर प्रत्येक गाड़ी के लिये पाँच रुपये वसूल किया करते थे । यदि कोई व्यापारी अधिक गाडियों पर माल ले आता तो पांच गाडियों में एक गाड़ी का शुल्क वे माफ़ कर देते थे ।

शिवगुप्त नामक एक व्यापारी पांच गाड़ियों पर माल लदवाकर विष्णुपुर से रामापुर के लिये रवाना हुए । रामापुर की सीमा पर राजभटों ने गाड़ियों को रोका । शिवगुप्त की गाड़ियों के आगे कई गाड़ियाँ सीमा शुल्क जमा करने के लिये खड़ी थीं ।

शिवगुप्त अपने सलाहकार चन्द्रिक से बोला, "इन सब व्यापारियों का शुल्क जमा होने पर रवाना होने में काफी समय लगेगा । इसलिये तुम जाकर हमारी बारी आते ही हमारी गाड़ियों का शुल्क जमा कर दो । " यह कहकर शिवगुप्त ने चन्द्रिक के हाथ में बीस रुपये दे दिये । चन्द्रिक रुपये लेकर चला गया और दस मिनिटों में लौट आया । बीस रुपये शिवगुप्त के हाथ लौटाते हुए वह बोला "हमारा काम बन गया । हमें शुल्क जमा करने की ज़रूरत नहीं है । "

शिवगुप्त ने विस्मय में आकर पूछा, "अरे, हमारी तो कुल पाँच गाड़ियाँ हैं न ? क्या हमारी एक भी गाड़ी का शुल्क नहीं लिया गया ? "

चन्द्रिक हँस कर बोला, "हमारे आगे खड़ी गाड़ियों के सभी व्यापारियों के पास केवल एक-एक गाड़ी है । मैंने उन लोगों को समझाया - हम सब मिलकर एक साथ शुल्क जमा कर दें, तो जल्दी यहाँ से निकल सकते हैं । इस पर उन लोगों ने अपने अपने शुल्क की रक़म मेरे हाथ में दे दी । मैंने अधिकारियों के पास जाकर वहाँ स्थित बीस गाड़ियों के साथ हमारी गाड़ियाँ मिलाकर पच्चीस अंक बताया । नियमानुसार राज्याधिकारियों ने पाँच गाड़ियों का शुल्क नहीं लिया । "

चन्द्रिक की बुद्धिमत्ता पर प्रसन्न होकर शिवगुप्त ने उसका वेतन दुगुना कर दिया ।

राजा के सपने

वत्सल देशपर राजा चन्द्रसेन का शासन था । वह अनेक प्रकार के अन्ध-विश्वास। को मानता था । उनमें उसका सब से गहरा अन्ध-विश्वास था कि आदमी जो भी सपना देखता है, वह सच होकर ही निकलता है ।

राजा चन्द्रसेन वैसे भी पराक्रमी और शासन कार्यों में दक्ष नहीं था । मगर उसका मन्त्री और सेनापति राजकाज में किसी प्रकार की त्रुटि न हों, इस बात का पूरा ख़याल रखते थे । वे दोनों बड़े ही राजनिष्ठ थे । मंत्री और सेनापति की दक्षता के कारण राज्य-कारोबार के सब काम सुव्यवस्थित ढंग से चलते थे । इन दोनों के कारण राजा चन्द्रसेन सुखपूर्वक राज्य चलाता रहा ।

एक दिन राजा ने नीन्द में एक सपना देखा। वह सपना था - राजा खुद गहरी नीन्द सो रहा है और उसी समय शयनागार में हाज़िर एक काला नाग राजा को डसने के इरादे से पलंग पर चढ़ता जा रहा है । इसी बीच एक पहरेदार ने शयनागार के दरवाज़े पर दस्तक देकर राजा को जगाया और अन्दर घुसकर साँप को मार डाला ।

दूसरे दिन अपनी आदत के अनुसार राजा चन्द्रसेन ने अपने सपने का वृत्तान्त मन्त्री और सेनापति को सुनाया । उसी वक्त वहाँ पहरेपर खड़े नन्द नामक पहरेदार ने वह हक़ीक़त सुन ली । वह बहुत दिनों से ऐसे मौक़े के इन्तज़ार में ही था । नन्द बड़ा धूर्त और चालाक़ था ।

राजा की इस दुर्बलता का अपने स्वार्थ के लिए कैसे उपयोग करे यही यह हमेशा सोचता रहता । सपनों के बारे में राजा के अन्ध-विश्वास के बारे में वह अच्छी तरह जानता था और वह इसी बात का लाभ उठाना चाहता था । इस सपने का वृत्तान्त सुनने पर उसने एक तरक़ीब सोची ।

भारती शाह

थोड़े दिन गुज़र जाने के बाद एक रात शयनागार का पहरा देते वक़्त, पहले ही किसी सँपेरे से ख़रीदा हुआ एक काला नाग उसने चुपके से अन्दर छोड़ दिया । इसके बाद घबराने का अभिनय करते हुए शयनकक्ष के दरवाज़े वह ज़ोर ज़ोर से खटखटाने लगा ।

राजा नीन्द से जाग उठा और किवाड़ खोलकर उसने गरजकर पूछा, "तुमने हमारी नीन्द क्यों हराम कर दी ? अगर कहने लायक कोई बात होती तो कल सुबह न कह सकते ? मैं अच्छी आराम की नींद सो रहा था, तुमने अकारण मेरी नींद को तोड़ दिया । ऐसी कौनसी जल्दी आ पड़ी ?"

"प्रभु, मुझे क्षमा करें । खिड़की से होकर एक काला नाग आप के कमरे में घुस आया है । उसको घुसते देख मैं डर गया और मैंने आप को जगाया । अगर कोई मामूली बात होती, तो मैं हर्गिज़ आपको न जगाता । मैं मूर्ख नहीं हूँ । आपकी जान मुझे अपनी जान से भी प्यारी है प्रभु । आपको ख़तरा है यह जानकर मैंने असमय आपको जगानेकी धृष्टता की । वरना मैं ऐसी ग़लती कभी न करता । प्रभु, मुझे क्षमा कीजिएगा ।" नन्द ने विनयपूर्वक निवेदन किया ।

विस्मय में आकर राजा ने शयनकक्ष की खोज करवायी । आखिर नाग मिल गया और सिपाहियों ने उसे मार डाला । राजा ने नन्द की मुस्तैदी की बड़ी तारीफ़ की और तुरन्त अपने गले का क़ीमती हार निकाल कर उसको इनाम दे दिया । राजा ने कहा – "शाबाश नन्द ! तुमने आज बहुत अच्छा काम किया । सपने में जो देखा जाता है, वह होकर ही रहता है । तुम्हारी दक्षता के कारण आज मेरे प्राण बचे । तुम्हारी कार्य-तत्परता प्रशंसा के योग्य है । मैं अकारण ही तुमपर गुस्सा हुआ । उस बात को भूल जाओ ।" सबेरा होते ही अपना सपना सच निकलने का समाचार राजा ने मन्त्री व सेनापति को सुनाया ।

वह बात सुनकर उन दोनों ने ताड़ लिया कि बड़ी अच्छी योजना बनाकर नन्द ने राजा को धोखा दिया है । मगर बताने पर भी राजा विश्वास नहीं करेगा यह सोचकर दोनों उस वक़्त चुप रहे ।

बाद में दोनों ने नन्द को अकेले में बुलाकर डाँटा, " सच बोलो, राजा के शयनागार में

तुम्हींने साँप छोड़ दिया था न ?"

पहले तो अपराध स्वीकार करने से नन्द ने इन्कार किया मगर उसकी अच्छी पिटाई करवाकर सेनापति ने उससे सच उगलवाया ।

मन्त्री ने उसको डाँट कर समझाया, "अरे दुष्ट! तुमने इनाम के लोभ में आकर जो ग़लती की है, उससे राजा और ही अधिक मूर्खता कर बैठेंगे । और इससे राज्य को क्षति पहुँचेगी तो उसकी ज़िम्मेदारी कौन उठाएगा ? आइन्दा कभी ऐसी भूल नहीं करो ।"

सेनापति ने नन्द को पिटवाया था, इससे गुस्से में आकर उसने सेनापति से इस बात का बदला लेने की ठानी और वह मौक़े की ताक़ में रहा ।

इस घटना के थोड़े दिन बाद राजा ने फिर एक सपना देखा - राजा को पंगु बनवाने के लिये कोई मन्त्र-तन्त्र क्रियाएँ करवा रहा है । मन्त्र फूँकनेवाला व्यक्ति स्पष्ट दिखाई नहीं दे रहा था, मगर उसके वस्त्रों से वह राज्य का कोई अधिकारी लग रहा था ।

दूसरे दिन राजा ने इस सपने का वृत्तान्त भी मन्त्री और सेनापति को सुनाकर कहा, "यह तो साबित हो चुका है न, कि मेरे सपने खरे निकलते हैं ? अब इस सपने से तो विदित होता है कि, हमारे दरबार में ही मेरा कोई शत्रु है । उसके मन्त्र फूँकक मेरा ख़ात्मा करने से पहले ही कोई जाल फैलाकर उसे पकड़ना होगा । यह काम तुम दोनों को ही करना है । " मुझे आशा है, तुम दोनों मिलकर कुछ दिमाग़ लड़ाओगे और उस दुष्ट का पता लगाकर मुझे निश्चिन्त बना दोगे ।

इस समय भी वहाँ स्थित नन्द ने ये सारी बातें सुन लीं । खूब सोचने के बाद सेनापति से बदला लेने का एक उपाय उसे सूझा ।

थोड़े दिन ऐसे ही बीत गये । अपनी खोयी हुई भैंस को ढूँढ़ने का बहाना बनाकर नन्द ने दरबार से छुट्टी ली और सीधे जाकर वह मान्त्रिक जोगिन्दर से मिला । फिर उसकी मदद से उसने वहाँ तीन रंगोंवाली बड़ी सी रंगोली बनवायी । रंगोली के मध्य एक खोपड़ी रख दी जिसको मुर्ग़ी के खून से लथपथ किया गया था । एक नीबू काटकर उसे कुंकुम से भर दिया और वे दो टुकडे रंगोली के दोनों ओर रख दिये । इसके बाद मान्त्रिक जोगिन्दर ने मिट्टी की एक प्रतिमा

बनाकर खोपड़ी के सामने रख दी ।

यह सारी तैयारी पूरी करने के बाद नन्द राजा के पास चला गया और उसने कहा, "महाराज, मैं अपनी खोयी हुई भैंस की खोज में श्मशान की ओर गया था । तब वहाँ श्मशान में हमारे खुद सेनापति आप को मार डालने के लिये एक मान्त्रिक द्वारा मन्त्र-तन्त्र रचवा रहे थे । मैंने अपनी आँखों से वह सब देखा । मान्त्रिक मन्त्र जपते, तन्त्र फूँकते बीच बीच में आप के नाम का उच्चारण कर रहा था और साथ ही एक मिट्टी के पुतले में काँटे गाड़ रहा था । मुझे देखते ही वे दोनों भाग गये और मैं भैंस की खोज छोड़कर यह ख़बर देने आप के पास आ गया ।"

राजा प्रथम नन्द की बातों पर विश्वास न कर पाया । मगर स्वयं उसने श्मशान में जाकर देखा, तब वहाँ नन्द की बतायी बातें सच ही निकली । क्रोधित होकर राजा ने तत्काल सेनापति को बन्दी करवाया । इसके बाद नन्द की भूरी भूरी प्रशंसा कर उसे क़ीमती पुरस्कार दिया ।

मन्त्री ने नन्द को बुलवाकर कहा, "तुम ने राजा की मूर्खता का सहारा लेकर सेनापति से बदला ले लिया है । तुम अगर सामने सामने अपनी भूल स्वीकार करके सेनापति को छुड़ाने में सहायता दो तो मैं तुम्हारी ग़लतियों को माफ़ करके राजा को समझाकर तुम्हें भी सज़ा मिलने से बचाऊँगा ।"

इसपर नन्द हँस कर बोला, "राजा तो मेरे हाथ का खिलौना है । मैं चाहूँ तो किसी उपाय से आप को भी क़ैद करवा सकता हूँ, ग़लती-वलती क्यों कबूल करूँ ?"

फिर थोड़े दिन बाद राजा चन्द्रसेन ने सपना देखा कि नन्द ने शत्रु-राजा से मिलकर उसकी हत्या कर दी है । राजा एकदम चौंक कर जाग पड़ा और सिपाहियों को बुलवाकर उसने नन्द को तुरन्त बन्दी बनाने का आदेश दिया ।

पहरा देता हुआ नंद राजा का आदेश सुनकर उसी वक्त भाग खड़ा हुआ । दूसरे दिन वह मन्त्री के घर गया और उसके पैरों पर गिरकर गिड़गिड़ाने लगा, "मैं बाल-बच्चों वाला हूँ । आप की बात न मानकर मैंने अपनी ही जान पर आफ़त मोल ली है । आप कृपया किसी प्रकार मुझे इस ख़तरे से बचाइये ।"

कई दिन बीत गये, मगर नन्द का कहीं पता

न चला । इधर राजा प्रतिदिन यही सपना देखता रहा कि रोज़ नन्द उसका संहार कर रहा है ! इस पर उसने मन्त्री से अनुरोध किया, "मन्त्री महोदय, आप किसी भी उपाय से नन्द को एकाध दिन में ही पकड़वाइये । मेरे सपने वास्तव में सच निकल रहे हैं । नन्द ज़रूर एक दिन मेरी हत्या कर देगा । "

मन्त्री ने दो दिन बाद राजा से मिलकर कहा, "महाराज, मुझे समाचार मिला है कि दो दिन पहले अपने गाँव में नन्द साप के डसने से मर गया है । अभी अभी एक ग्रामवासी ने आकर मुझे यह खबर दी है । "

यह ख़बर सुनकर राजा खुशी से उछल पड़ा ! उस दिन से राजा ने सपने में नन्द को नहीं देखा ।

एक हफ़्ते बाद मन्त्री ने राजा के दर्शन करके पूछा, "महाराज, क्या इन दिनों आप ने सपने में नन्द को देखा है ?"

राजा खिलखिलाकर हँस पड़ा और बोला, "वह तो मर चुका है न ? अब सपने में कैसे दिखाई देगा ?"

"महाराज, नन्द तो इस समय भी ज़िन्दा है । यह सिद्ध कर दिखाने के लिये मैंने ही उसको छिपा रखा है कि, सपने तो केवल हमारे भ्रम मात्र होते हैं । उसकी मृत्यु की ख़बर सुनने तक आप नन्द को प्रतिदिन सपने में देखा करते थे, मगर जब आप ने उसकी मृत्यु की बात सुनी तो वास्तव में ज़िन्दा रहनेवाले नन्द को आप ने फिर सपने में कभी नहीं देखा । अब आप ही समझ लीजिये कि सपने कैसे झूठ होते हैं । " मन्त्री ने कहा ।

"मेरे दो सपने तो सच निकले हैं न ? उनके बारे में क्या जवाब है तुम्हारे पास ? " राजा ने पूछा ।

"यह सब तो नन्द की की हुई धोखाधड़ी है । " कहकर मन्त्री ने नन्द को बुलवा लिया ।

नन्द प्रवेश कर पहले राजा के चरणों पर गिर पड़ा ! फिर उठकर उसने अपनी की हुई धोखाधड़ी के बारे में सारी बातें सच सच कह दीं और राजा से माफी माँगी ।

इसके बाद राजा ने सेनापति को मुक्त कराया और उस दिन से सपनों पर विश्वास करना बन्द कर दिया ।

धर्मनन्द नामक ज़मीनदार अपने नाम के अनुरूप दान-पुण्य के कार्यों में भी धर्मनन्द थे । उन्होंने अनेक व्रत, पूजा तथा तीर्थयात्राएँ की, फिर भी उन्हें कोई सन्तान न हुई । आश्चर्य की बात थी कि इतना सारा धर्माचरण करने पर भी भाग्य उनका साथ न देता था । हमेशा नई नई कठिनाइयाँ उन्हें सताती रहती । इस बीच उनकी पत्नी अचानक बीमार होकर स्वर्ग सिधार गयी । उसकी मृत्यु के दुःख में खुद धर्मनन्द भी घुल घुल कर एक महीने के अन्दर ही मर गये ।

धर्मनन्द के पास अनेक नौकर थे । उनमें से दो नौकर अत्यन्त विश्वासपात्र थे । एक रामसहाय था जो घर के काम-काज़ सम्हाल लेता था और दूसरा था सोमनाथ जो बाहर के काम देखा करता था । धर्मनन्द की मृत्यु के बाद ये दोनों पसोपेश में पड़ गये ।

इस हालत में एक दिन धर्मनन्द के मित्र पुण्डरीक, जो पडोसी गाँव के न्यायाधिकारी थे, वहाँ पहुँच कर बोले, "तुम्हारे मालिक धर्मनन्द ने मरने से पहले मुझसे सलाह-मश्विरा करके एक वसीयतनामा लिखवाया है । उसकी शर्तों के अनुसार उनका मकान एक अनाथ शरणालय को सौंपना है और नक़द बीस हज़ार तुम दोनों में आधे आधे बाँटकर देने को कहा गया है । मैं तुम दोनों को दस दस हज़ार देने आ पहुँचा हूँ ।"

"महाशय, बाकी सारी संपत्ति और जायदाद के बारे में क्या व्यवस्था की गयी है ?" सोमनाथ ने पूछा ।

"धर्मनन्द वैसे बहुत ही संपन्न थे, मगर उन्होंने दान-पुण्य के कार्यों में सारी संपत्ति खर्च कर दी । और यह बात किसी से छिपी है नहीं । तुम खुद जानते हो कि धर्मनन्द दान-धर्ममें किस तरह पानी का-सा पैसा बहा देते । अब कोई शेष संपत्ति है ही नहीं ।"

दुर्गा भारती

पुंडरीक ने जवाब में कहा ।

उसी रात सोमनाथ ने पुंडरीक के गाँव जाकर उनसे कहा, "महाशय, आप की बातों पर मुझे विश्वास नहीं हो रहा है । धर्मनन्दजी ने वैसे दिल खोलकर दान-धर्म किया ज़रूर, मगर फिर भी उनके पास अतुल संपत्ति थी । उनकी मृत्यु के समय उनके पास केवल बीस हज़ार रुपये ही बचे रहे, यह बात विश्वास रखने लायक प्रतीत नहीं होती ।"

पुंडरीक इसपर उत्तर देने में सकुचाने लगे, तब साहस करके सोमनाथ ने उनके हाथ में एक हज़ार रुपये रखे और बोला, "आप ने अपने हाथों से मुझे दस हज़ार रुपये सौंप दिये, इसलिये मैं आप के प्रति कृतज्ञ हूँ और उसमें से ये एक हज़ार मैं आप ही को भेंट कर रहा हूँ । अब आप कृपया बिना संकोच बिना कुछ छिपाये वसीयत की सारी बातें सच सच कह डालिये ।"

पुंडरीक मुस्कुराकर बोले, "सोमनाथ, तुम बड़े ही अक्लमन्द मालूम होते हो । तुमने ठीक ठीक भाँप लिया कि मैं वसीयत की कुछ बातें छिपा रहा हूँ । सच बात यह है कि, धर्मनन्द की संपत्ति के रूप में अब भी एक लाख रुपये की नक़द बाकी है । परन्तु धर्मनन्द ने तुम्हें तथा रामसहाय को पहले दस दस हज़ार देकर तुम्हारे लिये एक परीक्षा रखी है । उन्होंने मुझे आदेश दिया है कि तुम दोनों यह रक़म किस प्रकार खर्च करते हो इस पर मैं ध्यान रखूँ । उन्होंने यह भी आदेश दिया है कि तुम में से जिस के खर्च करने के तरीके से
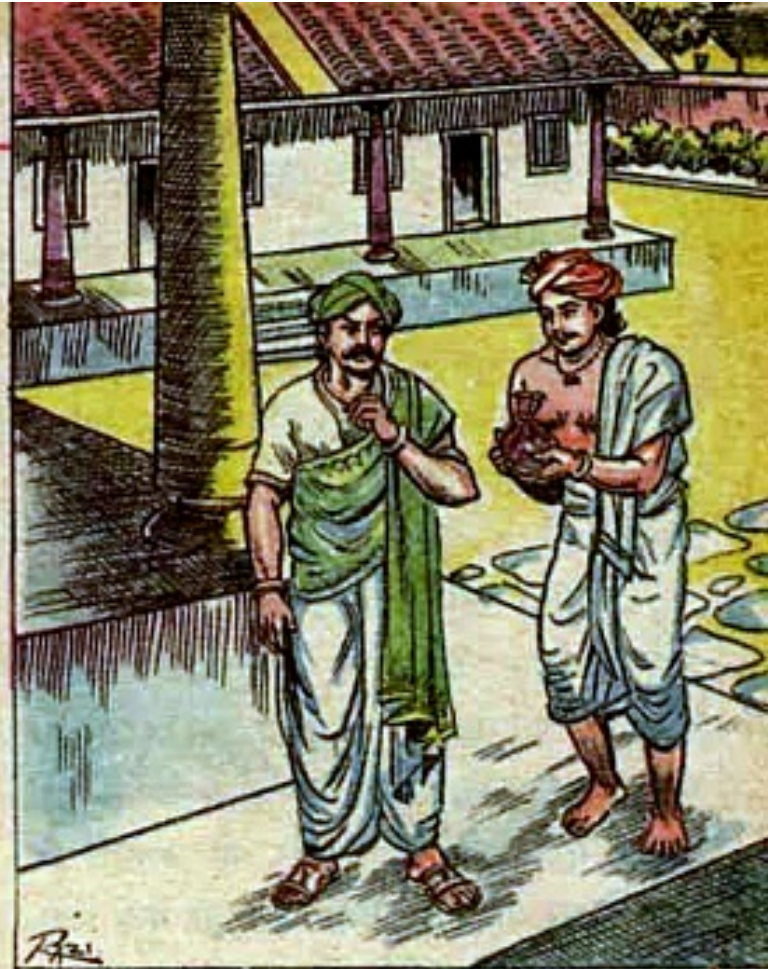
उनकी आत्मा को शान्ति मिल सकती है उसी को बाक़ी के एक लाख भी मैं सौंप दूँ । ये सारी बातें उस वसीयत में दर्ज़ हैं । केवल मैं ही नहीं, उनसे परिचित हर कोई जानता है कि कैसे कार्यों से उनकी आत्मा को संतोष होगा ।

पुंडरीक के मुँह से ये सारी बातें सुनकर सोमनाथ अत्यन्त खुश हुआ । उसने घर लौटकर शिल्पियों को बुलवा भेजा । उनसे धर्मचन्द की प्रतिमा गढ़वाकर उसने गाँव के प्रमुख चौराहे पर उसकी प्रतिष्ठापना की ।

इसके बाद शेष रकम लगवाकर धर्मनन्द की धर्मभावना और उनके दान आदि के संबंध में कथा, गीत व नाटक रचवाकर जनता में उनकी जीवनी का प्रचार करवाया ।

रामसहाय बेचारा वसीयत शर्त के बारे में कुछ नहीं जानता था । मगर अपने मालिक

के सच्चरित्र का उस पर ख़ासा अच्छा प्रभाव था । इसलिये उसके हाथ जो पूँजी आयी, उससे वह ग़रीबों को अन्नदान करने लगा । कोई उसकी दानशीलता की प्रशंसा करता तो वह कहता, "अरे, यह धन तो मेरा नहीं है, मालिक का दिया हुआ है । इसलिए यह सारी प्रशंसा पाने के योग्य वे ही हैं । "

कई दिन बीत गये । एक दिन पुंडरीक फिर धर्मनन्द के गाँव आ गये । सारे गाँववालों को इकट्ठा करवाकर उन्होंने धर्मनन्द की वसीयत उनके समक्ष पढ़ी और सब से पूछा, "अब गाँववालों, आप लोग ही बताइये कि धर्मनन्द की बाकी रही एक लाख की पूँजी सोम-नाथ को मिलनी चाहिये कि रामसहाय को ?"

गाँववालों ने एक आवाज़ में रामसहाय का नाम लिया । उन्होंने कहा, "धर्मनन्द अक्सर विकलांग और ग़रीबों में दान करके उनकी मदद करते थे । उनके मन में नाम कमाने की, यश संपादन करने की कामना रत्तीभर भी नहीं थी इसलिये उन्हीं की भाँति ग़रीब व असहाय लोगों को दान करनेवाले रामसहाय को ही शेष एक लाख रुपये मिलना उचित होगा । "

एक लाख रुपये रामसहाय को सौंपते हुए पुंडरीक ने सोमनाथ से कहा, "सोमनाथ, तुम ने वसीयत का रहस्य जानने के लिये पड़ोस गाँव जाकर वहाँ के न्यायाधिकारी को - याने कि मुझे - एक हज़ार रुपयों की रिश्वत दी ! तुम्हारी वे एक हज़ार मैं तुमको वापस दे रहा हूँ । तुम दोनों के स्वभाव जानना मेरे लिये आवश्यक था, इसलिये मैंने वह रक़म अपने पास रख ली थी ।

सोमनाथ ने शरम से अपना सिर झुका लिया । तब रामसहाय ने अपनी रक़म में से दस हज़ार रुपये उसको देते हुए कहा, "सोमनाथ, हमारे मालिक से प्राप्त सारा धन तुम ने अपने विचार के अनुरूप खर्च कर डाला है । इसलिये यह रक़म तुम अपने पास रख लो । "

इसके बाद रामसहाय ने शेष रक़म से धर्मचन्द के नाम से एक सराय बनवायी और ग़रीबों की सहायता करते हुए संतुष्टिपूर्वक अपना शेष जीवन बिताया ।

पाँच प्रश्न

3

दूसरे दिन अपने सामने बैठे धीरसिंह को देख सुलोचना बोली, "दक्षिण दिशा से हर अमावस के दिन अर्ध रात्रि के समय बहुत ही दीन स्वरों में बोले गये ये शब्द सुनायी देते हैं – 'ओह, मैं कोई उपयोगी काम न कर पाया, यह अमावस्या भी बीत गयी ।' – यह आवाज़ किसकी है ? बोलनेवाला ऐसा क्यों बोलता है ? इसका उत्तर दो । यही है मेरा तीसरा प्रश्न ।"

इस प्रश्न का उत्तर देने के लिये धीरसिंह ने सुलोचना से तीन महीनों की मुहलत माँगी और वह धीर वीर घोड़े पर सवार होकर दक्षिण दिशा में चल पड़ा । तीन दिन और तीन रात की यात्रा के बाद वह एक भयानक, घने जंगल के समीप पहुँचा । धीरसिंह ने घोड़े को वहीं छोड़ दिया और पैदल ही जंगल में घुस पड़ा । फिर तीन दिन की यात्रा करने पर वह जंगल पार कर पाया ।

जंगल से पाँच कोस की दूरी पर उसने एक सुन्दर नगर देखा । बड़े उत्साह में आकर वह उस नगर में प्रवेश करने लगा । इतने में विचित्र वेष किये हुए नगर के दो द्वार-पाल उसे रोककर बन्दी बनाने लगे ।

"मैं ने कोई अपराध तो नहीं किया है ! तुम लोग अकारण ही मुझे बन्दी क्यों बना रहे हो ?" धीरसिंह ने पूछा ।

द्वारपालों ने उसके प्रश्न की ओर कोई ध्यान नहीं दिया । उन्होंने धीरसिंह को बन्दी बनाकर राजा के सामने पेश किया ।

"तुम कौन हो ? किस देश से आये हो ?" राजा ने पूछा ।

"मैं नेपाल का राजकुमार हूँ, मेरा नाम है धीरसिंह । अपने राज्य के किसी ख़ास काम से मुझे आप के इस नगर को पार कर जाना है । मैं निर्दोष हूँ, फिर भी आप के ये सिपाही मुझे बन्दी बनाकर क्यों ले आये हैं ?" धीरसिंह ने पूछा ।

राजा के पार्श्व में स्थित मन्त्री ने इस पर कहा, "देखो धीरसिंह, जब भी कोई परदेसी इस नगर में प्रवेश करता है, तब हमारी राजकुमारी सीमन्तिनी देवी उससे तीन प्रश्न पूछती है । जो सही उत्तर नहीं दे पाते उनको मृत्युदंड दिया जाता है । यह हमारे नगर का रिवाज़ है ।"

"अन्याय है, अत्याचार है, जघन्य अपराध है यह ! भोलेभाले परदेशियों का वध्र करना सरासर ग़लत है, अन्याय है ! अन्याय और अत्याचार को रोकना राजा का कर्तव्य होता है, और आप हैं कि इस प्रकार की हरकत करते हैं – आप को यह शोभा नहीं देता ।" धीरसिंह ने आवेश में कह दिया ।

"हाँ, यह बात सच है । मैं भी मानता हूँ इसे ! मगर मैं यह रोक नहीं सकता, लाचार हूँ मैं ! एक यक्ष के शाप के कारण मेरी लाड़ली बेटी इस दुस्थिति का शिकार बनी हुई है । और इसी कारण मैं निन्दा का पात्र बना हुआ हूँ । चलो, तुम भी स्वयं देख लो ।" इतना कहकर राजा धीरसिंह को साथ लेकर राजकुमारी के महल की ओर चल पड़ा ।

उन्हें देखते हो राजकुमारी आँखें तरेरकर बोली, "ओह, क्या मेरे प्रश्नों के उत्तर देनेवाला धीर वीर आ गया है ?"

"हाँ, पूछो । क्या प्रश्न हैं तुम्हारे ?" धीरसिंह ने कहा ।

"सभी फलों में उत्तम व मधुर फल क्या है ?" सीमन्तिनी ने पूछा ।

"संतान-फल" धीरसिंह ने झट उत्तर दिया ।

"वह क्या चीज़ है जो कोई चाहता नहीं, पर सब को उसे भोगना ही पड़ता है ?" राजकुमारी ने दूसरा प्रश्न किया ।

थोडी देर मौन रहकर धीरसिंह ने कहा, "मृत्यु ।"

"वाह, खूब ! अब मेरा तीसरा प्रश्न भी

सुनो । – यही वह वस्तु है, तो समझो सब कुछ है । मगर वह न हो, तो बहुत कुछ होते हुए भी कुछ भी नहीं है । ऐसी वस्तु कौनसी है ? " सीमन्तिनी ने अपना आख़िरी प्रश्न पूछा ।

"वह वस्तु है – बुद्धि-बल । " धीरसिंह ने इस प्रश्न का भी तुरन्त उत्तर दे दिया ।

दूसरे ही पल सीमन्तिनी ज़ोर से हँसने लगी और बेहोश हो गिर पड़ी । उसी समय उसकी देह से काले नाग जैसी आकृति बाहर निकली । धीरसिंह ने उसे कसकर पकड़ लिया और एक कलश में बन्द कर के ज़मीन में गड़वा दिया ।

अब सीमन्तिनी ने धीरे धीरे आँखें खोली और पूछा, "यह सब क्या है ?" फिर उसने चारों तरफ दृष्टि दौड़ाकर देखा और उठकर धीमे कदमों से चलकर अपने पिता के पास खड़ी हो गयी ।

राजा की आँखों से आनन्दाश्रु झरने लगे । उसने धीरसिंह के हाथों को अपने हाथों में लेते हुए कहा, "तुमने मेरी बेटी को शापमुक्त करके मुझे भी निन्दा से बचाया है । मैं जीतेजी तुम्हारा यह ऋण चुका नहीं सकूँगा । "

"यह तो विधि का विधान है । मैं अब एक ख़ास बात का पता लगाने जा रहा हूँ । " इन शब्दों के साथ धीरसिंह ने राजा को अपने कार्य का परिचय करा दिया ।

"यह कण्ठ-ध्वनि तो हमें भी सुनायी देती है । लेकिन इस बात का पता नहीं चलता कि वह कहाँ से आती है । तुम तो असाधारण वीर हो, तुम्हें कोई कार्य असंभव नहीं होगा । मेरा आशीर्वाद है तुम्हें । " इतना कहकर राजा ने धीरसिंह को बिदा किया ।

इसके बाद धीरसिंह ने फिर दक्षिण दिशा में अपनी यात्रा शुरू की । तीन दिन बाद वह एक रेगिस्तान के निकट पहुँचा । अर्धरात्रि का समय और अमावस्या की रात थी वह ! आसमान में अत्र तत्र तारे टिमटिमा रहे थे । अचानक एक भयानक तूफान सा उठा और उसके एक तेज़ झोंके ने धीरसिंह को दक्षिण दिशा में स्थित एक पेड़ के नीचे पटक दिया । उसने उठकर चारों तरफ़ नज़र दौड़ायी । इस बीच उसने घोड़े के टापों की मन्दमन्द आवाज़ सुनी । वह उठ खड़ा हुआ और उस आवाज़ की दिशा में चलने लगा । सामने ही उसे एक पहाड़ दिखाई दिया । उत्साह में आकर वह पहाड़ पर चढ़ गया । दूसरी बाजू की

तलहटी में उसने एक विशाल मैदान देखा । इतने में बारह बार टन् टन् घण्टी बजी और तभी धुँधले से विचित्र प्रकाश में सैनिकों की पोशाकों में कुछ लोग उस मैदान की ओर आते दिखाई दिये । उन सब ने कीमती आभूषण धारण किये थे । उनकी देह से सुगन्ध फैल रही थी । मैदान में पहुँचकर वे रत्नखचित कालीन पर पंक्तिबद्ध होकर बैठ गये ।

उन लोगों से थोड़ी दूरी पर एक दुर्बल वृद्ध आदमी चिथड़े पहने, केश बिखेरे, भिखारी जैसे फर्श पर बैठकर चारों तरफ़ नज़र दौडाकर चिल्ला उठा, "उफ़, मैं कोई भी उपयुक्त कार्य न कर सका अब तक । यह अमावस भी बीत गयी । "

थोड़ी ही देर में वहाँ बैठे हुए लोगों के सामने सोने के थालों में मिष्टान्न हाज़िर हुए । उन में से एक ने एक ज्यादा थाल धीरसिंह को दिखाकर कहा, "तुम क्यों दूर खड़े होकर देख रहे हो ? आओ, तुम भी हमारे साथ खाना खा लो । "

धीरसिंह जाकर एक थाल के सामने बैठ गया ।

भिखारी की भाँति बैठे उस बूढ़े को छोड़ बाकी सब के सामने थाल परोसे हुए थे । मगर बूढ़े के सामने एक मिट्टी की थाली थी जिसमें सिर्फ़ पत्थर-कंकड भरे हुए थे । सब लोग मज़े से दावत उड़ा रहे थे और बूढ़ा दीनतापूर्वक उनकी ओर ताकते बैठा रहा ।

यह देख धीरसिंह ने उन लोगों से पूछा, "उस बूढ़े ने क्या अपराध किया है, कि जिसके लिये उसे यूँ भूखा सताया जा रहा है ?"

"यह बात आप उसी से पूछिये न । " सब ने एक साथ जवाब दिया ।

धीरसिंह ने अपने थाल से आधा खाना निकाल कर बूढ़े के हाथ में देकर उस को खाने को कहा । मगर दूसरे ही क्षण वे सारे पदार्थ कंकड़ों के रूप में बदल गये ।

"यह क्या विचित्र बात है ?" धीरसिंह ने पूछा ।

"यह बात मेरी अपनी करनी का फल है बेटा !" बूढ़े ने दुखभरी आवाज़ में कहा ।

"ऐसा क्यों हो रहा है ? तुम ने ऐसा कौनसा पाप किया है ?" धीरसिंह ने पूछा ।

वह एक रामकहानी है । यहाँ से अस्सी

कोस की दूरी पर स्थित विदिशा नगर का करोड़पति व्यापारी धनगुप्त हूँ मैं । मैंने करोड़ों रुपये कमाये, पर कभी मुट्ठी भर अनाज तक दान नहीं दिया । उल्टे दान देनेवालों को देख मैं उनका मज़ाक उड़ाता था । अपनी ओर से उनको रोकने का भरसक प्रयत्न भी करता था । ऐसा पापी हूँ मैं । इसके अलावा मेरे पास काम करनेवाले नौकरों को भी मैं उनकी तनख्वाह ठीक तरह से नहीं देता था, उनको खूब सताता था उल्टे

पचीस साल पहले दूर देशों में व्यापार करने के लिये रेशमी वस्त्र, मणि-माणिक आदि माल ऊँटों पर लादकर, बहुत से नौकरों को साथ लेकर मैं चल पड़ा । रास्ते पर इस रेगिस्तान में डाकुओं ने हम पर हमला किया । हमारा सब कुछ लुट गया । हम सब को मार कर उन्होंने यहाँ पर गाड़ दिया । मेरे सामने बैठकर मज़े से दावत उड़ानेवाले ये सब उस ज़माने के मेरे नौकर ही है । इन सब ने जब तब अपनी आमदनी में से यथाशक्ति दान-पुण्य करते हुए धार्मिक जीवन बिताया है और उसी के परिणाम स्वरूप ये अब स्वर्ग-सुख भोग रहे हैं । मैं धर्म के विरुद्ध, निरुपयोगी जीवन बिताकर अपने ही नौकरों के सामने नरक-यातनाएँ सह रहा हूँ । '' धनगुप्त ने आँसू पोंछते हुए अपनी कहानी समाप्त की ।

''इस बुरी हालत से बचने का अब भी कोई उपाय हो तो बोलो । तुम्हारी मदद करने की अपनी ओर से मैं भरसक कोशिश करूँगा । '' धीरसिंह उसे आश्वस्त करते हुए बोला ।

''मैंने जीतेजी जो धनार्जन किया, उसका

अधिकांश हिस्सा अपने घर के पिछवाड़े, द्वार से पूर्वी दिशा में दस गज की दूरी पर एक गड्ढा खोदकर उस में गाड़ रखा है । मगर इस रहस्य से अनभिज्ञ मेरे तीनों पुत्र आज दारिद्र के शिकार बनकर यातनाएँ झेल रहे हैं । मैंने जो धन रखा है, उसके चार हिस्से बना कर, तीन हिस्से जनता के कल्याण के कार्यों में लगा दें और एक हिस्सा मेरे पुत्र आपस में बाँट लें तो मुझे उत्तम गति प्राप्त होगी और मेरे पुत्र भी ठीक तरह से ज़िंदगी बिता सकेंगे । इतना होने पर मैं इस नरक कूप से मुक्ति पा सकूँगा । " धनगुप्त ने कहा ।

इसके बाद धीरसिंह वहाँ से निकल कर विदिशा पहुँचा । धनगुप्त के पुत्रों से मिलकर उसने उनको उनके पिता का सारा वृत्तान्त सुनाया । पहले तो उन्होंने धीरसिंह की बातों पर कोई विश्वास ही नहीं किया । मगर उसके अनुरोध पर जब उन्होंने घर के पिछवाड़े में खोदकर देखा, तब धनगुप्त का वह सारा धन मिल गया । वे बहुत ही आनन्दित हुए और उन्होंने अपने पिता के कहे मुताबिक उस धन का बँटवारा किया । तीन हिस्से दानपुण्य में खर्च कर के चौथा हिस्सा आपस में बाँट लिया और वे तीनों संपन्न व्यक्तियों का जीवन बिताने लगे ।

अगली अमावस्या के दिन तक धीरसिंह फिर रेगिस्तान के करीब स्थित पहाड़ तक पहुँचा । उस रात को जो लोग वहाँ उपस्थित थे, उनके साथ धनगुप्त भी कीमती वस्त्र और आभूषण पहनकर सब के बीच बैठा बातचीत करता हुआ दावत उड़ा रहा था । यह देख धीरसिंह अत्यन्त प्रसन्न हुआ ।

अपनी आँखों में आनन्दाश्रु भरकर धनगुप्त ने धीरसिंह के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की ।

इतना सब होने पर धीरसिंह कौशाम्बी लौट आया । धनगुप्त की सारी हकीक़त सुलोचना को उसने सुनायी । सारी कहानी खूब अभिरुचि से सुनकर सुलोचना ने कहा, "तुमने जो कुछ कहा, वह सब सत्य है । क्योंकि उस अमावस्या से वह दीन स्वर सुनाई नहीं दे रहा है । तुम्हारा साहस, पराक्रम, और परोपकार वृत्ति प्रशंसनीय है । कल मुझ से मिलो, मैं तुम्हें चौथा प्रश्न बताऊँगी । " यह कह कर
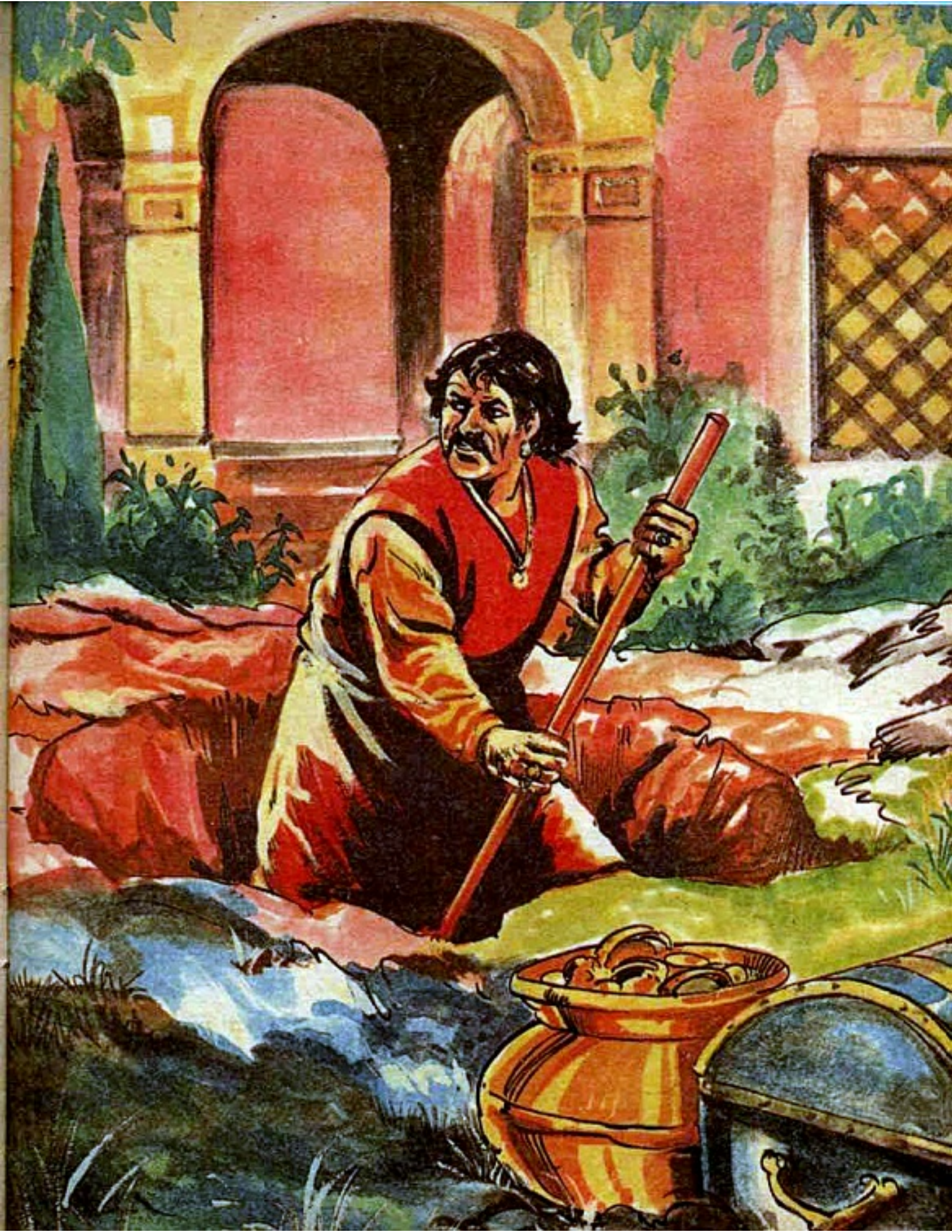
सुलोचना ने धीरसिंह को सादर बिदा किया।

सुलोचना मन-ही-मन धीरसिंह के पराक्रम पर परम प्रसन्न हुई । वह सोचने लगी - कैसा निडर है यह युवक ! मेरे एक एक प्रश्न का उत्तर देने के लिए कितने साहस कर रहा है यह । अकेला ही सर्वत्र घूमता है । दिन-रात यात्रा करता है । जंगलों में संचार करता है । हींस्र श्वापदों का ज़रा भी डर नहीं है इसे ! मुझे लगा था कि मेरे प्रश्नों के उत्तर देनेवाला इस दुनिया में संभवतः कोई नहीं । धीरसिंह ने पहले प्रश्न का उत्तर सही दिया, तब मैंने सोचा था - संयोगवश उसने ऐसी सफलता पाई । मेरे आगेवाले प्रश्नों का उत्तर ज़रूर नहीं दे सकेगा वह । पर आश्चर्य है कि मेरे कठिन दूसरे व तीसरे प्रश्न का उत्तर देने के लिए इसने और भी कठोर परिश्रय किये । जाने किस भगवान ने इस युवक को ऐसा महान् पराक्रमी बना दिया है ।

इसके माता-पिता के बारे में तो मैं कुछ जानती ही नहीं । क्या यह निर्भयता उसे विरासन में मिली है ? लेकिन इसके पिता के पराक्रम की कोई कहानी तो मैंने अब तक सुनी नहीं है । जो भी हो, उसकी बुद्धिमानी की जितनी तारीफ़ करे थोड़ी ही है । अगर मेरे तीन सवालों के जवाब भी वह अवश्य ही देगा । यह धुन का बड़ा पका है । एक बार कोई काम हाथ में लेता है तो बस उसे पूरा किये बग़ैर उसे चैन नहीं आता ।

सुलोचना के प्रश्न क्रमशः कठिन होते जा रहे थे । इस लिए चौथा प्रश्न पूछने के पहले कुछ सूचनाएँ देने का सुलोचना ने विचार किया । पर दूसरे ही क्षण उसे लगा - इसकी कुछ आवश्यकता नहीं है । धीरसिंह यथार्थनामा है । मेरे चौथे और पाँचवें प्रश्न का उत्तर देने के लिए वह और कड़ी मेहनत करेगा । क्यों न उसी को देख लें ?

सुलोचना अपने चौथे प्रश्न को ठीक-ठाक रूप देने लगी ।

[क्रमशः]

स्वार्थ या परार्थ

दृढव्रती विक्रमार्क वृक्ष के पास लौट आये । वृक्ष की शाखा से लटका शव उतारा और उसे कंधेपर डालकर हमेशा की तरह मौन ग्रहण कर स्मशान की ओर चल पड़े । इसपर शव में वास करनेवाले बेताल ने कहा, "राजा, आप की यह स्थिति देख मेरे मन में एक सन्देह पैदा हुआ है । आप इस अर्धरात्रि के समय अपनी पूरी शक्ति व युक्ति लगाकर यह जो कठोर श्रम उठा रहे हैं, वह सारा आप के निजी स्वार्थ के लिये कर रहे हैं, कि परार्थ के लिए ? साधारणतः हमारे समाज में हर कोई अपनी शक्ति और प्रतिभा का उपयोग अपने स्वार्थ के लिये ही करता है, दूसरों के उपकार के लिये यह सब करने की नहीं सोचते । बहुत समय पूर्व ऐसे ही सुदर्शन नाम के एक युवक ने अपनी सारी शक्ति व युक्तियों का उपयोग अपने परम हितैषी के लिये न करके अपने ही स्वार्थ के लिये किया था । यह बात अधिक स्पष्ट करने के लिये मैं आप को उसकी पूरी कहानी

बेताल कथा

सुनाता हूँ । गौर से सुनिये, आप अपने कष्ट भी भूल जायेंगे । सुनिये । "

बेताल कहानी सुनाने लगा :

प्राचीन काल में कन्याकुब्ज नगर में रत्नगुप्त नाम का एक प्रमुख वणिक रहता था । उसने अनेक प्रकार के लाभदायक व्यापार करके करोड़ों रुपये कमाये । वृद्धावस्था में प्रवेश करने पर भी विश्राम करने के बजाय अधिक संपत्ति कमाने के हेतु उसने और एक नया व्यापार शुरू किया - समुद्री व्यापार !

रत्नगुप्त सुगन्धी द्रव्य लेकर समुद्रमार्ग से पूर्वी द्वीपों में जा पहुँचा । वहाँ पर अपना माल अधिक दामों पर बेचकर उसने अपार धनार्जन किया । धन-सम्पादन के समय रत्नगुप्त कभी भी विश्राम की ओर ध्यान नहीं देता था । नये सिरे से उसने जो यह समुद्री व्यापार शुरू किया था, उस में इस प्रकार आशातीत लाभ होते देख वह दुगुने उत्साह से उसी व्यापार में लग गया ।

कहते हैं, धन की आस कभी पूरी नहीं होती । रत्नगुप्त को ज्यों ज्यों अधिक धन मिलता गया, त्यों त्यों उसकी धन की लालसा बढ़ती गई । रात में उसे चैन की नींद भी न आती । ज़रा नींद आई तो वह संपत्ति के सपने देखता । धन के अतीव लोभ ने मानो उसे पागल कर दिया ।

एक बार रत्नगुप्त अपने जहाज़ों पर सुगन्धी द्रव्य लदवाकर यात्रा के लिये चल पड़ा । कई दिन की यात्रा के बाद वह पूर्वी द्वीपों के एक राजधानी-नगर में पहुँचा और वहाँ की एक सराय में उसने अपना डेरा डाला । उसको रात में नींद नहीं आई । कल अपना माल बेचते समय कैसी कुशलता बरतनी है, अपने माल को ग्राहकों के सामने किस प्रकार पेश करना है, उसके गुणों का बखान कैसे करना है - आदि चिंतन में सारी रात कट गई ।

दूसरे दिन रत्नगुप्त ने अपना माल बेचना शुरू किया तो शाम तक उसका अधिकांश माल अच्छे दामों में बिक भी गया । उस रात भोजनोपरान्त बिक्री के काग़ज़ लेकर सराय के बाहरी चबूतरे पर हिसाब लगाने बैठ गया । आधी रात कट गयी, फिर भी बार बार जाँच करने पर भी उसका हिसाब ठीक बैठ नहीं रहा था । हिसाब लगाने में वह इतना व्यस्त था कि उसको आधी रात टल जाने का खयाल भी

नहीं रहा और हिसाब ठीक होने तक वैसे भी वह विश्राम की बात सोचनेवाला नहीं था ! बात यह थी कि एक अच्छा सफल व्यापारी होते हुए भी गणित में उसकी गति बहुत मंद थी । हिसाब-किताब की कार्रवाई में उसे बड़े कष्ट होते । यही कारण था कि आधी रात बीतने पर भी उसका हिसाब ठीक मेल नहीं खा रहा है । अतः वह परेशान हुआ, और उसकी यह परेशानी बढ़ती ही रही ।

उसी चबूतरे के दूसरे छोरपर एक युवक लेटा हुआ था । अपनी चिन्ता में नीन्द न आने के कारण वह करवटें बदल रहा था और रत्नगुप्त की अस्वस्थता को निहार रहा था । उसके मन में रत्नगुप्त के प्रति आश्चर्य और जिज्ञासा पैदा हुई । उठकर वह युवक रत्नगुप्त के पास पहुँचा और उसने कहा, "महाशय, मेरा नाम सुदर्शन है । आप इस अवस्था में आधी रात के समय अपने हिसाब-किताब के पीछे परेशान लग रहे हैं । "

रत्नगुप्त ने सिर उठाकर सुदर्शन को देखते हुए कहा, "बेटा, मैं एक व्यापारी हूँ । आज दिन भर इस नगर में अपना बहुत सारा माल मैंने बेच दिया है । उसका हिसाब ही अभी ठीक नहीं बैठ रहा है, इसलिये परेशान हूँ मैं । "

"आप को अगर एतराज न हो तो वे कागज़ात मेरे हाथ दे दीजिये; मैं आप का हिसाब ठीक करने की कोशिश करूँगा । " युवक ने कहा । वह आगे बोलने लगा, "महानुभाव, गणित मेरा प्रिय विषय है । बचपन से ही बड़ी रुचि के साथ मैंने उसका अध्ययन किया है । आप के व्यापार का

करते हुए उसका परिचय जानने की जिज्ञासा दिखायी ।

"मैंने अपना नाम तो पहले ही बता दिया है । कुछ साल पूर्व मैं अपने पिता के साथ कन्याकुब्ज से व्यापार के काम से इन पूर्वी टापुओं में आया और हम यहीं रह गये । मेरे पिताजी व्यापार में बहुत सारी संपत्ति खो बैठे और स्वदेश लौटने का उनका मन ही नहीं हुआ । आख़िर चिन्ता में घुल घुल कर उनकी मृत्यु हुई । इसके थोड़े दिन बाद मेरी माँ भी स्वर्ग सिधारी । राजदरबार में कोई नौकरी पाने की आशा से मैं यहाँ राजधानी-नगर में आया हूँ ।" सुदर्शन ने थोड़े में अपना परिचय दिया ।

रत्नगुप्त ने ज़रा सोचकर कहा, "सुनो सुदर्शन, आजीविका के लिये केवल नौकरी ही एक साधन नहीं है । तुम्हें यदि व्यापार के प्रति अभिरुचि हो, तो मेरे साथ अपने देश लौट चलो और व्यापार में मेरी मदद करो ।"

सुदर्शन ने प्रसन्नता पूर्वक अपनी स्वीकृति दी । शेष माल की बिक्री के बाद रत्नगुप्त सुदर्शन को साथ लेकर अपने देश की ओर चल पड़ा ।

हिसाब मेरे लिये बायें हाथ का खेल होगा ।" यह कहकर उसने रत्नगुप्त के हाथ से कागज़ ले लिये और चन्द मिनटों में उसका हिसाब ठीक करके रत्नगुप्त को आश्चर्य में डाल दिया !

रत्नगुप्त ने सोचा – क्या अजीब बात है ? मैं घंटों से परेशान हूँ कि हिसाब ठीक नहीं लग रहा है । और यह लड़का इतने थोड़े समय में मेरे हिसाब को पूरा कर सका । उसने ठीक ही कहा कि गणित उसका प्रिय विषय है । तभी तो जिस काम को घंटों खप कर मैं कर न पाया, उसे इसने मिनटों में कर दिया । मन-ही-मन सुदर्शन की होशियारी की उसने तारीफ़ की ।

रत्नगुप्त ने सुदर्शन के प्रति कृतज्ञता प्रकट

विनयशील सुदर्शन बड़ा ही मेधावि था । अपने व्यवहार तथा काम के बल शीघ्र ही उसने रत्नगुप्त का प्यार जीत लिया ।

थोड़े दिन बीत गये । रत्नगुप्त ने फिर एक बार पूर्वी द्वीपों में व्यापार की तैयारी की । लेकिन ऐन वक्त पर वह बीमार हुआ ।

उस स्थिति में उसने सुदर्शन से कहा, "बेटे,

तुम अकेले ही माल लेकर चले जाओ । हमारे पास दस लाख का माल है । उसका मूल्य वहाँ पंधरह लाख ज़रूर होगा । यात्रा खर्च आदि निकालकर हमें चार लाख का नफा सहज ही मिल जायेगा । तुम तुरन्त निकल पड़ो । ''

इसपर सुदर्शन जहाज़ों पर माल लदवाकर पूर्वी द्वीपों में पहुँचा । वह इस बार उसी सराय में टिका, जहाँ पिछली यात्रा के समय रत्नगुप्त ठहर चुका था । वहाँ आये और कुछ व्यापारियों के साथ उसका परिचय हुआ ।

व्यापारियों से वार्तालाप के दौरान सुदर्शन को उनसे यह मालूम हुआ कि – इस समय वहाँ सुगन्धी द्रव्यों की बड़ी माँग है । लेकिन और एक महीने के अन्दर ही उन चीज़ों का दाम और बढ़ने की उम्मीद है । इसलिये और एक महीने तक वह अपना माल न बेचे तो उसे दुगुना लाभ मिल सकता है । फिर भी यह साहसभरा काम है । वे लोग भगवान पर भरोसा करके और एक महीना अपना माल वैसे ही रखना चाहते थे । ऐसा ही वह भी करे । यह उपदेश उन्होंने सुदर्शन को दिया ।

थोड़ा विचार करके सुदर्शन ने उन से कहा, "मैं जहाँ तक हो सके जल्द ही अपना माल बेचकर स्वदेश लौटना चाहता हूँ । ''

शीघ्रही अपना माल बेचकर सुदर्शन स्वदेश लौटा । सुदर्शन से उसके अनुभव सुनकर रत्नगुप्त ने अपने लाभांश का चौथा हिस्सा उसको दे दिया ।

कुछ और दिन बीतने पर सुदर्शन ने फिर पूर्वी द्वीपों में व्यापार के लिये जाने का इरादा

किया । उसका विचार जानकर रत्नगुप्त बहुत प्रसन्न हुआ और बोला, "सुनो बेटा, एक व्यापारी के लिये अपनी संपत्ति पर संतुष्ट होकर विश्राम करते रहना अनुचित है । तुम ज़रूर माल लेकर निकल पड़ो । इस बार तुम आधे व्यापार का साझेदार रहोगे । "

इसके बाद फिर सुदर्शन ने सामान जहाज़ों पर लदवाया और पूर्वी द्वीपों में जाकर फिर उसी सराय में ठहर गया । इस समय भी अन्य व्यापारियों के साथ उसकी बातचीत हुई । उसने कहा, "हमारे माल का भाव थोड़े ही दिनों में बढ़ने की संभावना है, इसलिये मैं और कुछ दिन इन्तज़ार करूँगा । "

सुदर्शन की कलपना के अनुसार सुगन्धी द्रव्य अधिक दाम पर बिक गये और उसे दुगुना लाभ हुआ । फिर भी उसने तत्काल अपने देश लौटने का कार्यक्रम नहीं बनाया; बल्कि कुछ दिन और वहाँ रुककर हाथी-दाँत पर कारीगरी की गयी चीज़ें उसने ख़रीदीं और उन्हें लेकर वह कन्याकुब्ज को लौट आया ।

घरों को सुशोभित करने में अधिक अभिरुचि रखनेवाले गृहस्थों के हाथ सुदर्शन ने वे चीज़ें अधिक मूल्यपर बेची और इस प्रकार और कुछ अधिक लाभ प्राप्त किया ।

रत्नगुप्त सुदर्शन की इस व्यापार कुशलता से और अधिक प्रसन्न हुआ । एक दिन मौक़ा पाकर उसने सुदर्शन से कहा, "बेटा, इधर मैं कुछ दिनों से तुम से एक बात कहना चाहता था । मेरे तो केवल एक ही इकलौती कन्या है । मैं तुम से खूब प्रभावित हूँ । इसलिये सोचता हूँ कि क्यों न मैं तुम्हें अपना जामाता बना हूँ ! क्या तुम्हें यह नाता स्वीकार है ? "

सुदर्शन मान गया । रत्नगुप्त ने अपनी बेटी का विवाह बड़े ही वैभव के साथ संपन्न किया ।

यह कहानी सुनाकर बेताल ने कहा, "राजा, यह सुदर्शन बड़ा स्वार्थी मालूम होता है न ? रत्नगुप्त के यहाँ वह जिन दिनों नौकर था, तब कुछ व्यापारियों ने उससे कहा था कि थोड़े दिनों में माल के भाव बढ़नेवाले हैं इसलिये कुछ दिन रुक जाओ । मगर उसने उनकी एक न मानी और उसी वक्त जो कुछ लाभ प्राप्त होनेवाला था उतना ही लेकर उसने माल बेच डाला । लेकिन दूसरी बार रत्नगुप्त के साथ व्यापार में हिस्सेदार बनने के बाद मात्र, भाव

बढ़ने की संभावना देख वह कई दिन रुक गया । इसके अलावा उस देश में सस्ते दाम में मिलनेवाली हाथी दाँत की चीज़ें खरीद लाया और स्वदेश में ज़्यादा दाम पर बेचकर उसने खूब लाभ कमाया । पहली बार वह इसलिये सावधान रहा कि यदि वह अपनी शक्ति और युक्ति का उपयोग करता तो उसके मालिक को ही कहीं ज़्यादा लाभ प्राप्त हो जाता । लेकिन जब उसे मालूम हुआ कि वह भी अब व्यापार में साझेदार है, तब दूसरी सफ़र पर अपनी प्रतिभा का उपयोग करके उसने अपने व्यापार की खूब उन्नति की । ऐसे स्वार्थी सुदर्शन के स्वभाव को रत्नगुप्त इतना अनुभवी होते हुए भी कैसे पहचान नहीं पाया ? और उल्टे उसने सुदर्शन की व्यापार-दक्षता की प्रशंसा कैसे की ? क्या रत्नगुप्त इतना भोला था, कि वह सुदर्शन के स्वभाव को पहचान ही न पाया ? इस सन्देह का समाधान जानकर भी न बताओगे तो तुम्हारे मस्तक के टुकड़े टुकड़े हो जाएँगे । ''

इसपर विक्रमार्क ने कहा, ''इस बात का कोई आधार नहीं है कि सुदर्शन स्वार्थी है । पहली बार जब वह पूर्वी द्वीपों में व्यापार के लिये गया तब वह केवल एक नौकर के रूप में गया था । इसलिये मालिक के आदेशों का पालन करना ही उसका कर्तव्य था; स्वयं निर्णय लेने का उसे कोई अधिकार नहीं था । दूसरी बार वह साझेदार था, मालिक था । इसलिये वह लाभ व हानि दोनों को समान रूप से उठाने को तैयार हो गया । इस समय वह किसी दूसरे के लिये उत्तरदायी नहीं था । वापसी यात्रा के समय उसने दूसरे व्यापार के सम्बन्ध में इसलिये विचार किया कि वह निजी प्रतिभा का परिचय दे सके । इस प्रकार एक नौकर के रूप में अपनी ज़िम्मेदारी व कर्तव्यनिष्ठा का परिचय देने और मालिक के रूप में अपनी व्यापार-कला का परिचय देने में उसने अपनी अनुपम बुद्धि का उपयोग किया है । इस लिए तुम्हारे मन में जो शंका है वह पूर्णतः निराधार लगती है । ''

यह कहकर राजा के मौन होते ही बेताल शव के साथ अदृश्य होकर फिर वृक्ष पर जा बैठा ।

कल्पित

ठाट-बाट

एक किसान के एक जवान बेटा था । उसे ठाट-बाट का बड़ा शौक था । वह सोचता था कि कीमती वस्त्र पहनने से समाज में मान्यता और प्रतिष्ठा प्राप्त होती है । उसके पिता को उसका यह शौक बिलकुल पसंद नहीं था । वह ऐसे मौके की ताक में था जब अपने बेटे को अच्छा सबक़ सिखाया जा सके ।

एक दिन किसान ने अपनी बाँझ गाय को खूब सजाया और फिर लड़के से कहा - "जाओ, इसे बाज़ार ले जाओ और अच्छे दाम पर बेच आओ । "

बाज़ार में बिक्री के लिए आई गाय को देख कर हर कोई पूछता रहा - "यह गाय रोज़ाना कितना सेर दूध देती है ? " उसकी सजावट को देख कोई उसका सौदा करने तैयार नहीं हुआ ।

शाम तक बाज़ार का समय खतम हो गया । किसान के लड़के ने गाय को सस्ते-से-सस्ते दाम पर बेचना चाहा, फिर भी कोई उसे खरीदने के लिए तैयार न हुआ । निराश होकर बेचारा गाय के साथ घर लौट आया ।

किसान ने अपने लड़के को समझाया - "बेटा, जो गाय दूध नहीं देती, उसके गले में घंटियाँ देखकर कोई उसे नहीं खरीदता; देखा न तुमने ! ठाट-बाट का कोई मूल्य नहीं होता । "

जब लड़के को यह प्रत्यक्ष पाठ मिला तो उसके व्यवहार में बहुत बदल हो गया । अब वह सादा जीवन बिताने लगा ।

चन्दामामा पुरवणी - ५
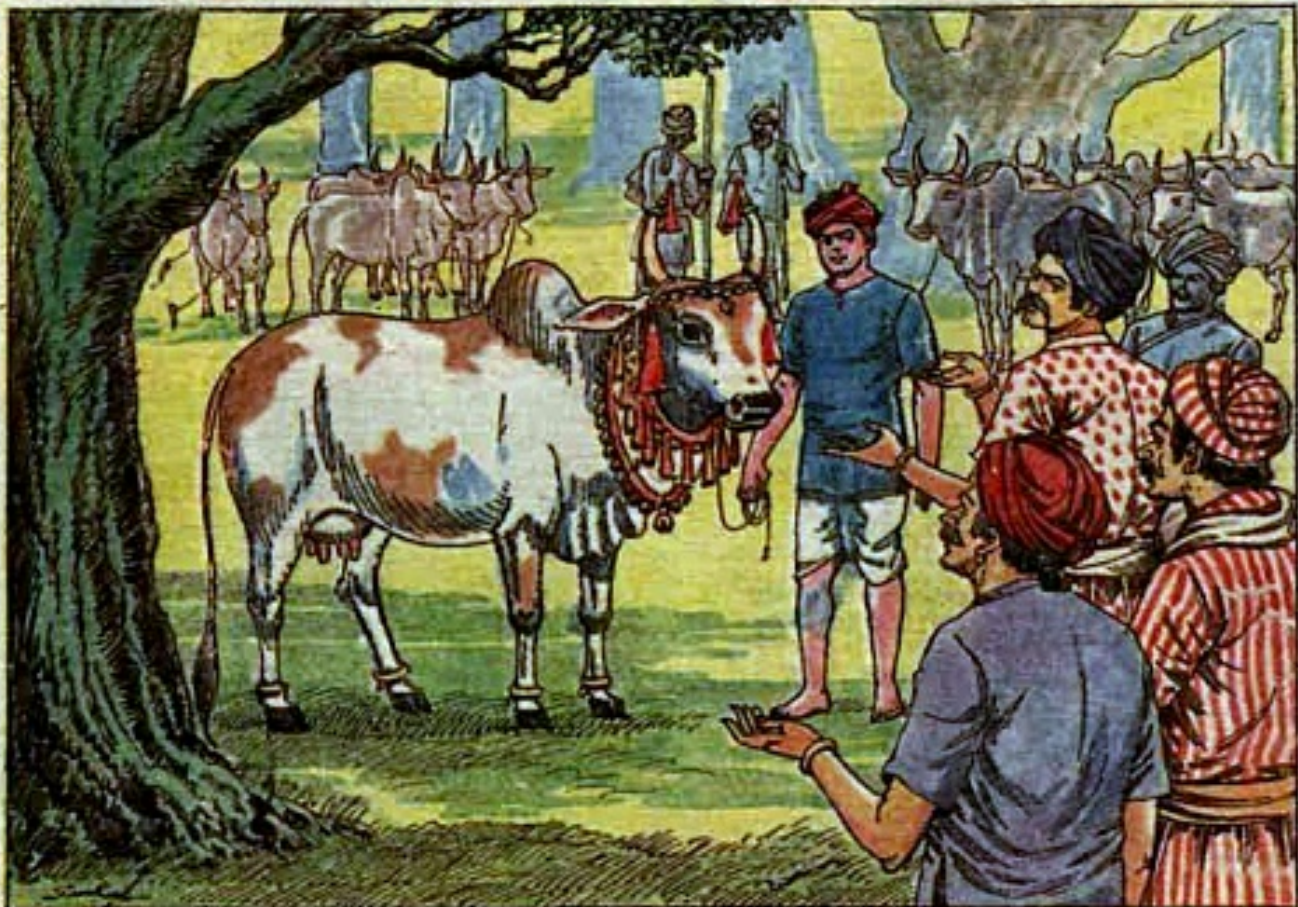
ज्ञान का ख़ज़ाना

इस मास का ऐतिहासिक व्यक्तित्व

दारा शिकोह

बादशाह शाहजहाँ और बेगम मुमताज महल का ज्येष्ठ पुत्र दारा शिकोह का जन्म २० मार्च १६१५ को हुआ । वह अपने पिता को बहुत प्रिय था और अपने समय का बड़ा विद्वान था । वह मानता था कि सत्य किसी एक धर्म की बपौती नहीं है । उसने हिन्दू धर्म का गहरा अध्ययन किया था और भगवद्गीता तथा कई उपनिषदों का पर्शियन में अनुवाद किया था ।

१६५७ में जब शाहजहाँ बीमार पड़ा तब दारा उसके साथ था । अपेक्षा थी कि पिता की मृत्यु के बाद सिंहासन का अधिकारी दारा ही बनेगा । पर शाहजहाँ के सब से छोटे बेटे औरंगज़ेब ने अपने दो भाइयों को दारा के खिलाफ़ उकसाया । दारा सरल प्रकृति का और बड़ा ईमानदार था, फिर भी उसने जिनके प्रति अत्यन्त दयापूर्ण व्यवहार किया था, ऐसे मित्रों ने भी उसको धोखा दिया । अपने भाई-शत्रुओं द्वारा कई लड़ाइयों में उसे हार खानी पड़ी । तब उसने पर्शिया जाने का निश्चय किया । रास्ते में जीवन मलिक के घर में उसने आश्रय लिया । दारा ने एक बार उसे एक महान् संकट से बचाया था । फिर भी मलिक ने उसे औरंगज़ेब के सहायकों के हाथ सौंप दिया । औरंगज़ेब ने उसे मौलानाओं के कब्ज़े में दिया । उन्होंने उसे काफिर करार किया और उसे मौत की सज़ा दी । ३० अगस्त १६५९ को उसे क़त्ल किया गया ।

वह कौन ?

देश भर में बरसों भ्रमण करने के उपरान्त एक विद्वान अपने नगर प्रतिष्ठान पहुँचा । उसने सैंकड़ों कहानियों का संग्रह किया था और अब वह उन्हें अपने आश्रय-दाता राजा को पढ़कर सुनाना चाहता था । मगर राजा ने उनमें कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई । चुपचाप उसने दरबार छोड़ दिया । किसी एकान्त स्थान पर अपनी हस्तलिखित कहानियों को उसने जलाना शुरू किया । जब राजा ने इसके बारे में सुना, तब राजा उसे ऐसा करने से रोकने पहुँचा । पर तब तक सात संग्रहों में से छः अग्निदेव के भक्षण हो चुके थे । सातवाँ संग्रह मात्र बच गया । जिस मूल भाषा में ये कहानियाँ लिखी गई थीं, वह भाषा तो अब नहीं है, बची कहानियों का बाद में संस्कृत में भाषान्तर किया गया ।

वह कौन ? पृष्ठ ८ देखिए

विज्ञान के मज़े
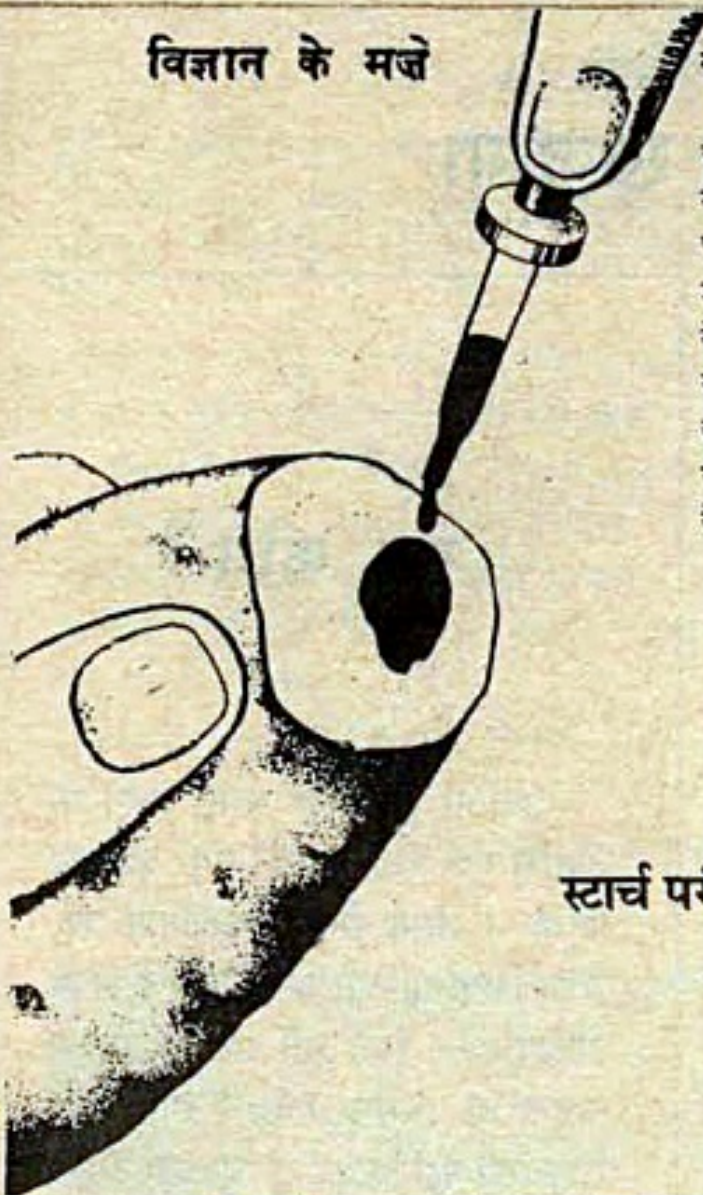
सूचनाएँ :

रसोई में काम आनेवाले किसी पिष्ठमय पदार्थ पर आयोडिन की चन्द बून्दे डालिए और जो नीला या जामुनी रंग चढ़ता है उसे देखिए । यह पिष्ठमय पदार्थ की परीक्षा है । क्या देखना है उसे मालूम करने पर आलू, ब्रेड का टुकडा या किसी अन्य खाद्य पदार्थ पर आयोडिन डालिए । किसमें पिष्ठमय घटक है आप बता सकेंगे ? कच्चे आलू के समान पदार्थ ताज़ा हो, तो पिष्ठमय पदार्थ के सूखने तक आपको रुकना ज़रूरी होगा । फिर उसी प्रकार आपकी कापी के एक कागज का टुकडा, समाचार-पत्र का कागज़, डिट्टो पेपर का एक टुकडा या किसी मासिक-पत्रिका के चमकीले कागज पर आयोडिन डाल कर देखिए ।

स्टार्च परीक्षा

क्या होता है और क्यों :

आलू, आटा और आटे से बने खाद्य पदार्थ (जैसे ब्रेड) तथा नोट-बुक का और डिट्टो कागज़ में पिष्ठमय पदार्थ का अस्तित्व दिखाई देता है, जब कि समाचार-पत्र का कागज़ और बहुत चमकीले कागज़ में नहीं । समाचारपत्र के कागज़ को चिकना बनाने के लिए किसी द्रव्य का उपयोग नहीं किया जाता, जब कि भारी चमकीले कागज़ में उसका उपयोग होता है । जैसा कि आप देखेंगे, कापी का और डिट्टो कागज़ में पिष्ठमय द्रव्य होता है ।

अन्न-पदार्थ के कुछ गुण सूँघने से या स्वाद से मालूम होते हैं । क्या पिष्ठमय पदार्थ का अस्तित्व यों जाना जा सकता है ? मकई के स्टार्च को सूँघकर या चख कर क्यों न देखें ?

पिष्ठमय पदार्थ पाचन होने के पूर्व साधारण शक्कर के रूप में परिवर्तित हो जाते हैं, और हमारे मुँह में पैदा होनेवाली लार एक पाचक रस है । इसी कारण से पिष्ठमय पदार्थों के कण किसी के मुँह में देर तक रहें तो वे शक्कर के रूप में बदल जाते हैं । आप मुँह में एक ब्रेड का टुकड़ा रखेंगे, तो चन्द मिनटों में वह कुछ मीठा लगने लगेगा । क्या आप ऐसा महसूस करते हैं ?

संभवतः आपको मालूम है कि शक्कर दाँतों के स्वास्थ्य को बिगाड़ती है । अतः खाने के बाद दाँतों को साफ़ करना न भूलें ।

संसार के आश्चर्य

डायना का मंदिर

एशिया मायनर के पश्चिम किनारे पर एफीसस नाम का एक शहर बसा था । इस शहर में जो एक शाही मंदिर था, उसीके कारण यह शहर सुप्रसिद्ध था । यह मंदिर डायना का था । (ग्रीक में उसका नाम था आर्टेमिस ।) कहा जाता है कि एफीसस के लोगों ने पीढी-दर-पीढी खपकर २२० वर्षों में इस मंदिर को बनाया । दुर्दैव से रोमन सम्राट नीरो ने ई. पू. २६२ में इस मंदिर को लूटा और गॉथ लोगों ने उसका सर्वनाश किया ।
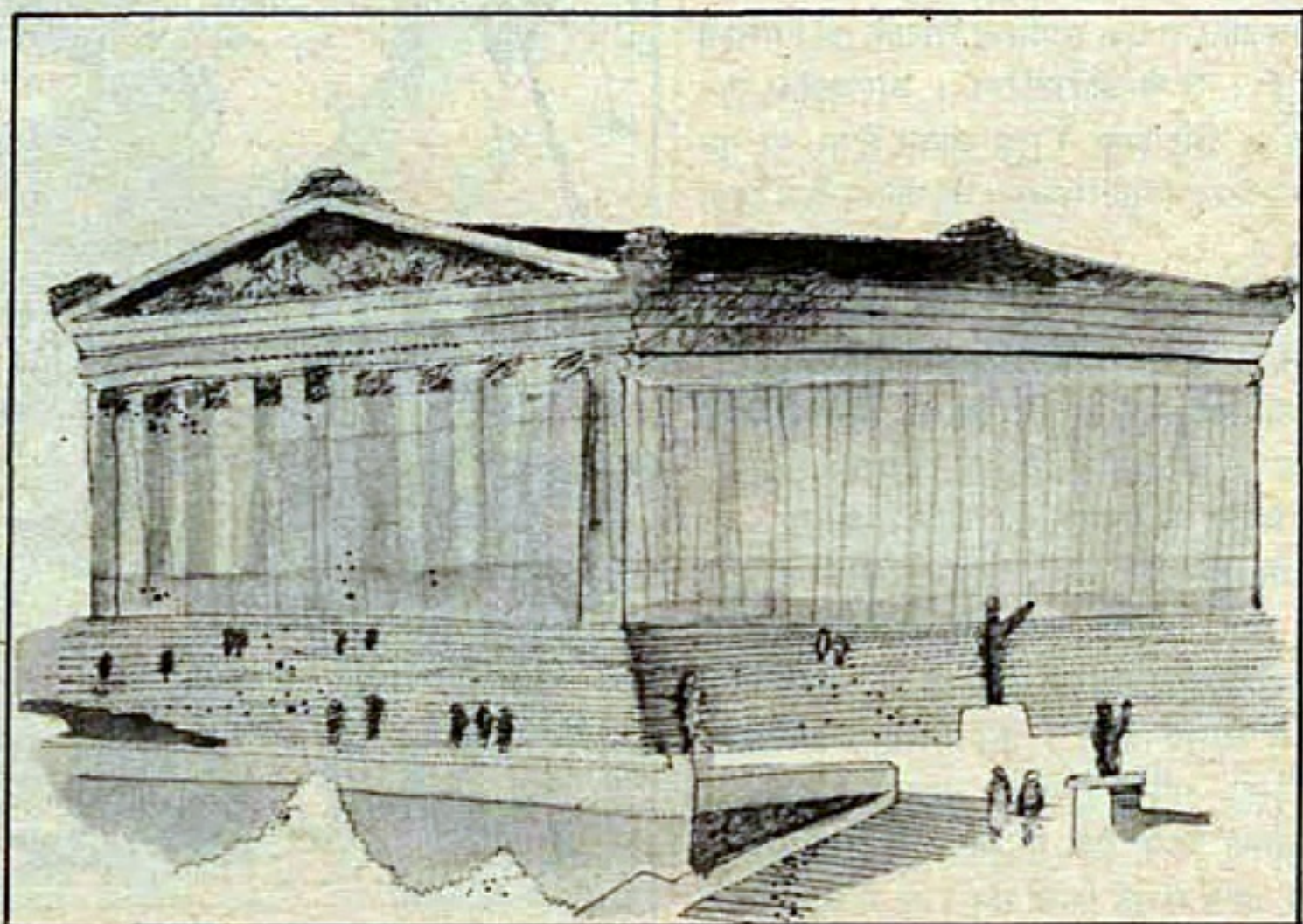
अलेक्झँडर के

विश्वास किया जाता है कि मॅसिडॉन के राजा फिलिप का लड़का अलेक्झँडर सचमुच एक देवता का पुत्र था । बचपन से ही उसे विश्वास था कि जो सफलता औरों को न मिली वह उसके भाग्य में बदा है ।

उसके पिता भी सोचते थे कि उनके पुत्र में एक विशेष आत्मा का निवास है । इसका कारण यह था कि जिस दिन अलेक्झँडर का जन्म हुआ, उसी दिन फिलिप ने एक लड़ाई में अभूत-पूर्व यश प्राप्त किया था ।

सौभाग्य से अलेक्झँडर की शिक्षा-दीक्षा मानवजाति के एक सुप्रसिद्ध शिक्षक की निगरानी में हुई । वे थे-ॲरिस्टॉटल । अलेक्झँडर ने कहा – "मेरे पिता ने मुझे जीवन दिया, पर गुरु ॲरिस्टॉटल ने मुझे सिखाया वह जीवन कैसे जिया जाय । "

ॲरिस्टॉटल ने अलेक्झँडर को जगज्जेता बनना सिखाया कि नहीं यह कहना मुश्किल है । पर ॲरिस्टॉटल ने उसे जिगीषा की प्रवृत्ति से प्रेरित किया । अलेक्झँडर ने कई लड़ाइयाँ लड़कर उस प्रवृत्ति को पनपाने की कोशिश की ।

यह ईसा की चौथी शताब्दी की बात है । उस समय पर्शिया एक बलाढ्य राष्ट्र था और महान् डारियस उसका राजा था । अलेक्झँडर ने उसे पराभूत किया । इस विजय से उत्साहित हो उसने अपनी सेना के साथ कई देशों पर आक्रमण किये, एक के बाद एक विजय प्राप्त किये, अन्त में वह ईसवी सन् ३२६ में भारत पहुँच

गर्व को चुनौती

गया ।

ऐसी समृद्ध संस्कृति का दर्शन उसने इससे पहले कभी नहीं किया था । तक्षशिला के राजा के साथ लड़ाई करने की सब से पहले उसने तैयारी की । परंतु तक्षशिला के राजा ने जिस सन्मान ने साथ उसका स्वागत किया, उसे देख वह बड़ा ही प्रभावित हुआ । अलेक्झँडर के सन्मान के लिए आयोजित समारोह में बहुतेरे राजा उपस्थित थे, पर एक राजा उसमें नहीं पधारा । वह था पुरु, जिसका राज्य झेलम के उस पार था । उसने अलेक्झँडर को लड़ाई के लिए ललकारा ।

एक तूफानी रात में अलेक्झँडर ने झेलम को पार किया । पुरु की सेना को इस की ज़रा भी अपेक्षा न थी । पुरु ने झट अपने सेना को बटोरा और युद्ध के लिए तैयार हुआ । घमासान लड़ाई हुई, जिसमें पुरु अपने बहुतेरे सैनिकों के काम आने तक लड़ता रहा । अलेक्झँडर उसकी शूरता से प्रभावित हुआ । अन्त में खून से लथ-पथ पुरु को अलेक्झँडर के सामने पेश किया गया, तो अलेक्झँडर ने पूछा – "बोल पुरु, मैं तुम्हारे साथ कैसे बर्ताव करूँ ?" पुरु ने जवाब दिया – "एक राजा दूसरे राजा के साथ जैसा बर्ताव करता है वैसा !" अलेक्झँडर ने फिर पूछा – "इतना ही, कि कुछ और ?" पुरु ने कहा – "बस, मैंने जो कहा उसमें सब कुछ आ गया !" जवाब सुनकर अलेक्झँडर खुश हुआ, और उसने पुरु की स्वतन्त्रता अबाधित रखी । दोनों दोस्त बन गये ।

१. एक भारतीय युवक ने अपने ढीठ वाणी से महान् अलेक्झेंडर को अपमानित किया । वह कौन ?
२. उसने कौन-से घराने की स्थापना की ?
३. उसका सलाहकार और मंत्री कौन था ?
४. उसके लिखे प्रसिद्ध ग्रंथ का नाम क्या है ?
५. उस ग्रंथ की विशेषता क्या है ?
६. कनिष्क ने किस महान वैद्य को आश्रय दिया था ?
७. उस वैद्य ने कौनसा ग्रंथ लिखा ?
८. कलकत्ता शहर की नींव किसने डाली ?
९. किस दिन से इस शहर की रचना का प्रारंभ हुआ ?
१०. कलकत्ते का सब से प्राचीन स्थान कौन है ?

पृष्ठ ८ देखिए

अपने सामान्य ज्ञान की जाँच करेंगे ?

१. नये पैदा हुए कांगारू का आकार कितना बड़ा होता है ?
२. एक संगीत-नाट्य बहुत मशहूर हुआ । चार वर्षों की अवस्था में उसकी रचना करनेवाला कौन ?
३. चींटी कितना वज़न उठा सकती है ?
४. ओरँग उटान शब्द का क्या मतलब है ?
५. दुनिया में सब से सूखा स्थान कौनसा है ?
६. सूरज के आकारवाले स्थान में कितनी पृथ्वियाँ समा सकती हैं ?
७. पृथ्वी पर पड़ी भारी-से-भारी उल्का कहाँ देखी जा सकती है ?
८. मनुष्य की दोनों किड़नियों में स्थित नसों की लंबाई कितनी होगी ?
९. बरसात के पानी में विटामिन होता है ?
१०. क्या जीसस के जन्म-काल से २५ दिसंबर ख्रिसमस के रूप में मनाया जाता है ?

१. रचनात्मक साहित्य के लिए भारत का राष्ट्रीय पुरस्कार कौनसा है ?

२. यह पुरस्कार प्रदान करनेवाली संस्था का नाम क्या है ?

३. इसी प्रकार की अन्य दो संस्थाएँ कौनसी हैं ?

४. भारत के कौन-से प्रधान मंत्री सुप्रसिद्ध लेखक थे ?

५. उनके लिखे तीन प्रधान ग्रंथ कौनसे हैं ?

६. रवीन्द्रनाथ टागोर को साहित्य के लिए रखा नोबेल पुरस्कार कब मिला ?

७. उनके किस ग्रंथ के लिए यह पुरस्कार उन्हें मिला था ?

८. वह पोर्तुगीज़-भारतीय युवा कवि कौन था, जिसने अंग्रेज़ी में सुंदर काव्य-रचना की ?

९. महान् राष्ट्रीय नेता लोकमान्य तिलक का लिखा मशहूर ग्रंथ कौनसा है ?

पृष्ठ ८ देखिए ।

सभी भारतीय भाषाओं का एक शब्द सीख लें !

- हृदय -

आसामी : *हृदय;* **बंगला :** *हृदय;* **गुजराती :** *हैयुँ, हृदय;* **हिन्दी :** *हृदय;* **कन्नड :** *हृदय;* **काश्मीरी :** *दिल;* **मलयालम :** *हृदयम्;* **मराठी :** *हृदय;* **ओरिया :** *ह्रुदय;* **पंजाबी :** *हिरदा, दिल;* **संस्कृत :** *हृदय;* **सिंधी :** *दिलि, हियन;* **तमिल :** *इदयम्;* **तेलुगु :** *गुंडे;* **उर्दू :** *दिल, ज़मीर ।*

आपको विश्वास है ?

१. कि अगर माँ-बाप अल्पायुषी हों, तो बच्चा भी अल्पायुषी होगा ?
२. कि आईस्क्रीम का प्रभाव ठंड़ा होता है ?
३. कि सपने रंगीन नहीं हो सकते ?

नहीं, नहीं

१. संशोधन बताता है कि जहाँ तक आयुर्मान की बात है, इन दोनों का आपस में कोई संबंध नहीं है ।
२. आईस्क्रीम में भरपूर कॅलरीज होती है, इस लिए परिणामतः वह शरीर में गरमी पैदा करती हैं ।
३. सपने रंगीन भी हो सकते हैं ।

उत्तरावलि

वह कौन ?

गुणाढ्य । इसकी रचित बृहत्-कथा का बाद में संस्कृत में सोमदेव ने भाषान्तर किया जो कथा-सरित्-सागर नाम से प्रसिद्ध हुआ ।

इतिहास

१. चन्द्रगुप्त ।
२. मौर्य घराना ।
३. कौटिल्य या चाणक्य ।
४. अर्थशास्त्र ।
५. कानून और समाजशास्त्र संबंधी वह संसार का सर्वप्रथम सुरचित ग्रंथ है ।
६. चरक ।
७. चरक-संहिता ।
८. जॉब चार्नॉक ।
९. २४ अगस्त १६९० ।
१०. काली घाट पर बना काली-माता का मंदिर ।

सामान्य ज्ञान

१. एक इंच का तीन-चौथाई हिस्सा । परंतु संपूर्ण विकास होने तक वह अपने माँ के पेटवाली थैली में रहता है ।
२. मोझार्ट । वह संगीत-नाटक है मिथ्रिडाइट्स् ।
३. अपने वज़न का पचास गुना भार ।
४. जंगल का अतिप्राचीन मानव ।
५. चिली में स्थित स्थान कलामे । मानव की स्मृति के अनुसार अब तक यहाँ कभी बरसात नहीं हुई ।
६. एक मिलियन से अधिक पृथ्वियाँ ।
७. आफ्रिका में । उसका वज़न ६० टन है । उसको 'होबा वेस्ट' उल्का के नाम से पहचानते हैं ।
८. लगभग ४० मील ।
९. हाँ, विटामिन बी ।
१०. नहीं, सिर्फ इ.सन ४४० से ।

साहित्य

१. साहित्य अकादमी पुरस्कार ।
२. साहित्य अकादमी ।
३. संगीत-नाटक अकादमी और ललित-कला अकादमी ।
४. जवाहरलाल नेहरू ।

५. भारत का शोध, विश्व-इतिहास की झलक और मेरी कहानी ।
६. सन १९१३ में ।
७. गीतांजलि ।
८. हेन्री डेरोझिओ ।
९. गीता-रहस्य ।

नेहरु की कहानी - 2

जवाहरलाल जब दस साल के हुए, तब मोतीलालजी अपने नये भवन 'आनन्दभवन' को बनाया । नेहरू परिवार उसमें रहने गया । नया विशाल मकान और आस-पास का परिवेश देख बालक जवाहर उत्साह और आनन्द से भर उठा ।
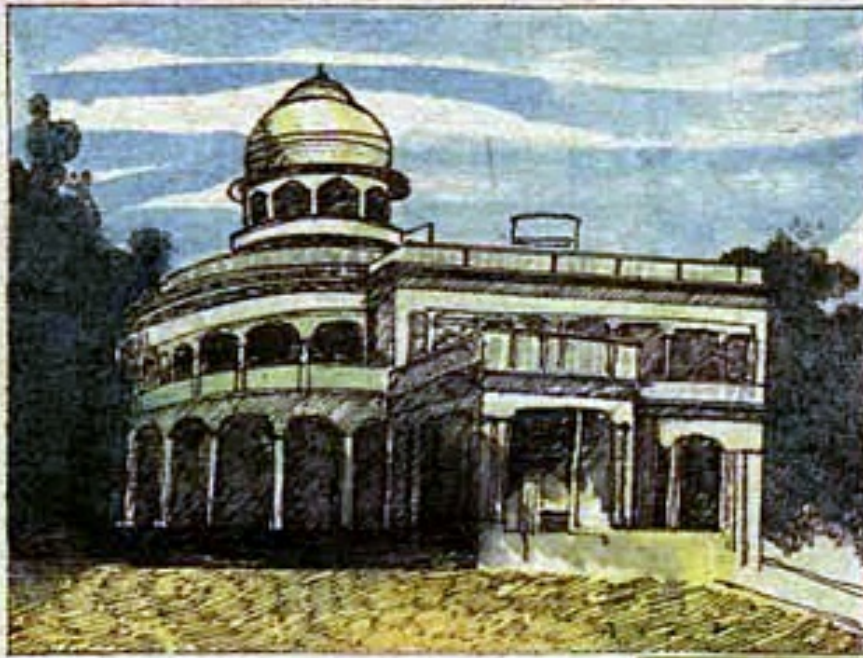
जवाहर को एक कमी बराबर खटकती थी कि उसके साथ खेलने के लिए कोई भाई या बहन नहीं है । कुछ समय बाद उसके एक बहन हुई । इसकी ख़बर देते हुए डॉक्टर ने जवाहर से कहा - "तुम भाग्यवाले हो कि तुम्हारे बहन नही हुई । तुम्हारी जायदाद बाँटने के लिए भाई नहीं आया है । " जवाहर को इस बात पर बड़ा गुस्सा हुआ कि डॉक्टर उसे स्वार्थी मान बैठे ।

इस बीच मोतीलाल इंग्लैण्ड हो आये । तो कट्टरपंथी काश्मीरी ब्राह्मणों ने समुद्र पार करने के अपराध में उनके प्रायश्चित्त करने पर ज़ोर डाला । पर मोतीलाल ने प्रायश्चित्त करने से साफ़ इन्कार कर दिया । इस कारण समाज में बड़ी हलचल मची । उस समय अंधविश्वासों और हेतुवाद के बीच जो संघर्ष चल रहा था, उसे जवाहर-लाल भली भाँती समझ सके ।

जवाहरलाल के अंग्रेज़ अध्यापक का नाम था एस्.टी. ब्रुक्स । उनकी निगरानी में उसने 'एलिसेस अँडवेन्चर्स', 'द जंगल बुक', 'डॉन क्विक्झोट' आदि अंग्रेज़ी किताबों को पढ़ा । जवाहरलाल अपने अध्यापक की बहुत इज़्ज़त करते थे ।

मि. ब्रुक्स 'दिव्य ज्ञान' के हामी थे । उनका विश्वास था कि मानव अपना भौतिक शरीर छोड़कर अदृश्य आत्मा के साथ एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँच सकता है । जवाहरलाल इन बातों को अक्सर सुना करता था । कभी कभी रातों में सपने देखता – कि वह बादलों के बीच उड़ रहा है ।

जवाहरलाल समाचार-पत्रों में जब रूसी और जापानी युद्ध के समाचार पढ़ता तब उसके मन में राष्ट्रीय भावनाएँ उभरती थीं । उसके मन में यह भावना उठती कि वह एक प्राचीन सैनिक की तरह हाथ में तलवार लिये भारत के स्वतंत्रता-संग्राम में कूद पड़ा है ।

जवाहर जब पंद्रह साल का था, तब उसके माता-पिता उसे इंग्लैंड ले गये । लंदन पहुँचने के बाद दूसरे ही दिन वह सुप्रसिद्ध डर्बी रेस (घुड़-दौड़) देखने गया । उस दिन जवाहर ने इंग्लैंड में रहनेवाले कई प्रमुख भारतीयों को देखा ।

इसके बाद जवाहर पढ़ने के लिए हॅरो चला गया । माता-पिता ने उसको सभी अजनबी लोगों के बीच छोड़ दिया । शुरू में उसको अकेलापन खटका जरूर, पर धीरे धीरे जवाहर उस वातावरण में घुल-मिल गया । यहाँ खेल-कूद में उसकी रुचि बढ़ती गई ।

सन १९०५ में इंग्लैंड में आम चुनाव हुआ । जवाहर चुनाव संबंधी समाचार अखबारों में बराबर पढ़ता रहता । एक दिन शिक्षक ने वर्ग में चुनाव के परिणाम के संबंध में प्रश्न पूछा, तो केवल जवाहर ही उसका संतोषजनक उत्तर दे पाया ।

इसके साथ ही जवाहर अपनी मातृभूमि में घटित होनेवाली घटनाओं में भी बड़ी दिलचस्पी दिखाने लगा । उन दिनों बंगाल, पंजाब और महाराष्ट्र के देशभक्त ब्रिटिश शासन-कर्ताओं के खिलाफ़ बड़ा आंदोलन चला रहे थे । उन समाचारों के संबंध में आपस में चर्चा करने के लिए हॅरो में जवाहर को कोई साथी नहीं मिला ।

जवाहर को पाठशाला में पुरस्कार के रूप में इटली के देशभक्त गॅरीबाल्डी की जीवनी की पुस्तक प्राप्त हुई । उस पराक्रमी वीर की कहानी पढ़कर जवाहर विशेष प्रभावित हुआ । उसके मन में भारत और इटली दोनों हिल-मिल गये ।

शीघ्र गति से मानसिक विकास करनेवाले जवाहर को अब हॅरो छोटा लगने लगा । उसने पिता को सूचित किया कि उसे केम्ब्रिज में भर्ती करना अधिक लाभदायक होगा । मोतीलाल ने इसे तत्काल स्वीकृत किया । यों हॅरो में दो वर्ष बिताकर अब जवाहर केम्ब्रिज के लिए चल पड़ा ।

(क्रमशः)

भोलाराम की शादी

सीतापुर में भोलाराम नाम का एक सीधा-सादा आदमी रहा करता था । उसे अपने पिता की ओर से संपत्ति अवश्य प्राप्त हुई थी, फिर भी वह मेहनत करके अपना पेट पालता था । गाँव के कई लोग उसके साथ अपनी कन्या को ब्याहने के लिए तैयार थे ।

ऐसे में एक दिन पड़ोस के गाँव से रुद्रप्रसाद नाम का एक दगाबाज़ आदमी वहाँ आ पहुँचा ।

उसके साथ एक काली-कलूटी बदसूरत लड़की थी । वह दुष्ट गाँव के लोगों को समझाने लगा - "भाइयों, यह मेरी लड़की है । इधर दो महीने पहले यह भोलाराम हमारे गाँव आया था । तब उसने मेरी बिटिया के साथ शादी की । आज तक मैं इंतज़ार करता रहा कि एक दिन भोलाराम आएगा और अपनी बीवी को ले जाएगा । मगर ये महाशय आने से रहे । लाचार होकर आज मैं अपनी लड़की को इसे सौंपने आया हूँ । मुझे शक है कि भोलाराम कहीं मेरी बेटी के प्रति अन्याय तो नहीं करेगा । मैं आप लोगों से मदद माँगने के लिए आया हूँ । आप लोग ही इसे कुछ कहियेगा । "

गाँववालों को रुद्रप्रसाद की बातें कुछ अजीब-सी लगीं । फिर भी तमाशा देखने के इरादे से कुछ लोग रुद्रप्रसाद के साथ भोला के घर पहुँचे ।

भोलाराम ने साफ़ कह दिया कि उसने कभी रुद्रप्रसाद की लड़की की सूरत तक नहीं देखी है । शादी की तो बात ही और ।

इस पर रुद्रप्रसाद ने धमकी दी - "देखो, भोला बनने के कोशिश मत करो । मैं कोई ऐसा-वैसा आदमी नहीं हूँ । अपने गाँव के गवाह पेश कर सकता हूँ । "

भोलाराम गाँव के मुखिये के पास गया और इस बला से बचाने का अनुरोध किया । मुखिया जानता था कि भोलाराम सचमुच भोला है । वह सोचने लगा कि भोला को इस मुसीबत से कैसे बचाया जाय ।

दूसरे दिन गाँव में लक्ष्मीप्रसाद नाम का एक और आदमी आया । उसके साथ एक सुंदर युवती थी । उसने गाँववालों को बताया कि चार महीने पहले भोला उनके गाँव आया था, तब उसने इस युवती के साथ शादी कर ली है ।

भोलाराम ने सिर पीटकर हो-हल्ला मचाया । कहा - "खुदा की क़सम, इस लड़की से मैंने शादी नहीं की है । "

अब लक्ष्मीप्रसाद गाँव के मुखिये के पास शिकायत लेकर गया । उस समय रुद्रप्रसाद वहीं पर बैठा था ।

मुखिये ने दोनों की बातें गौर से सुन लीं । और फिर कहा - "तुम दोनों की बातें सुनकर लगता है, भोलाराम ने पहले लक्ष्मीप्रसाद की लड़की से शादी कर ली । वह अमीर बाप की रूप-संपन्न कन्या है । अगर भोलाराम ने उसके साथ शादी की है, तो वह दुबारा दूसरे गाँव में जाकर रुद्रप्रसाद की इस लड़की से शादी नहीं करेगा । इस लिए यह स्पष्ट है कि तुम दोनों में से कोई एक झूठ बोल रहा है । "

रुद्रप्रसाद ने कहा - "अगर मैं झूठ बोल रहा हूँ, तो अभी अपने गाँव से गवाह ले आता हूँ । " लक्ष्मीप्रसाद ने भी गवाह हाज़िर करने की बात कही । इस बात को लेकर दोनों के बीच काफी वाद-विवाद हुआ ।

उसी समय वहाँ पर एक कसाई आ पहुँचा । उसने रुद्रप्रसाद की लड़की की ओर लाल-पीली आँखें करके कहा - "अरी नादान, तुम यहाँ पहुँच गई हो ? क्या तुम्हें पहले यह मालूम न था कि कसाई के साथ शादी करने पर उसके घर में मरे जानवरों की खाल उधेड़नी ही पड़ेगी ? शादी करने से पहले तुम्हें इस बात पर सोच लेना चाहिए था । शादी के बाद तुम घर से भाग जाओगी तो मैं तुम्हारी खाल नहीं उधेड़ दूँगा ? चल मेरे साथ कि मार दूँ एक लात ? लातों के भूत बातों से नहीं मानते ! "

मुखिये ने पूछा - "तो क्या इस लड़की के साथ तुम्हारी शादी हुई है ?"

"जी हाँ, यह मेरी बीवी है । हमारी शादी के गवाहों को मैं ले आया हूँ अपने साथ । वे उधर गली में खड़े हैं । आप इजाज़त दें तो उन्हें बुला लाऊँ ?" कसाई ने पूछा ।

मुखिये ने गवाहों को बुला लिया । सब ने एक स्वर में कहा कि कसाई ने रुद्रप्रसाद की बेटी से शादी कर ली है ।

मुखिये ने अपना फ़ैसला सुनाया – "अब और गवाहों की ज़रूरत नहीं है । रुद्रप्रसाद की लड़की भोलाराम की बीवी नहीं है । "

"ये सब झूठे गवाह हैं । मैं हर्गिज़ कसाई के साथ नहीं जाऊँगी । " बदसूरत लड़की ने साफ़ साफ़ कह दिया ।

"तुम्हारे पिता रुद्रप्रसाद ने इस कसाई के साथ तुम्हारी शादी कराई है । इसके लिए ये सभी लोग गवाह है । तुम्हें अपने पति के घर जाना ही पड़ेगा । " मुखिये ने अंतिम फ़ैसला सुनाया ।

यह सुनकर बदसूरत लड़की की आँखों में आँसू भर आये । उसने मुखिये को निवेदन किया – "साहब, रुद्रप्रसाद मेरे पिता नहीं, मामा है । भोलाराम को अबोध समझ कर उस पर अपना अधिकार चलाने के लिए यह तिकड़म रचा गया है। भोलाराम के साथ कभी मेरी शादी नहीं हुई । मैं सच बता रही हूँ । मिहरबानी करके मुझे क़साई के हाथ न सौंपिएगा । "

मुखिये ने कहा – "बस, अब तो समस्या हल हो गई है । अब भोलाराम लक्ष्मीप्रसाद की पुत्री के साथ अपनी गृहस्थी चला सकता है । "

"हुज़ूर, सच कहता हूँ, मैंने इस युवती के साथ भी कभी शादी नहीं की है । " भोलाराम ने नम्र निवेदन किया ।

लक्ष्मीप्रसाद ने कहा – "अच्छा भाई, तुम्हारी बात मान लेते हैं । लेकिन अब यह बताओ कि मेरी इस कन्या के साथ शादी करने के लिए तुम तैयार हो, या इसमें तुम्हें कुछ आपत्ति है ?"

"मुझे तो यह सब एक अजूबा लगता है । समझ में नहीं आता कि यह सब आश्चर्यजनक क्या हो रहा है ।" अचरज प्रकट करते हुए भोलाराम ने कहा ।

अब लक्ष्मीप्रसाद ने सब को वस्तु-स्थिति से परिचित कराया – " अपनी पुत्री के लिए मैं एक सुयोग्य वर ढूँढ़ रहा था । मुझे डर है कि मेरी इस भोली-भाली लड़की को विवाह के बाद कोई धोखा दे सकता है । इस हालत में मुझे भोलाराम के बारे में ख़बर मिली । मैंने उसकी परीक्षा करनी चाही । अचानक मुझे रुद्रप्रसाद की योजना का समाचार उसके एक गाँववाले ने दिया । रुद्रप्रसाद की योजना को विफल बनाने के लिए मैंने इस क़साई की मदद ली । समझ गये सब ?"

"इसके क़साईपन का परिणाम चलो अच्छा ही निकला । अच्छा, अब यह बताओ भोलाराम के बारे में आपकी क्या राय है ?" मुखिये ने पूछा ।

लक्ष्मीप्रसाद ने उत्तर में कहा - "मुझे लगता है, भोलाराम अबोध हो सकता है । पर जो कुछ हुआ उसमें यह सिद्ध हुआ कि झूठे आरोपों से डरकर दूसरों के सामने आत्म-समर्पण करनेवाला नहीं है । भोलाराम की जगह कोई और होता तो मेरे एक लाख रुपयों के मोह में आकर मेरी खूबसूरत लड़की से शादी की बात फौरन मान लेता । मेरे विचार में भोलाराम बड़ा नेक और ईमानदार है ।"

"इससे तुम्हारा भला क्या लाभ होगा ?" मुखिया ने पूछा ।

"देखिये, हमारे समाज के दगाबाज़ों से भोलाराम को बचाने के लिए मुझ जैसे व्यक्ति की बहुत आवश्यकता है । अगर यह मेरी लड़की से शादी करेगा तो मैं इसका सहारा बनकर रहूँगा । अपने मन की बात मैंने आप सब लोगों के सामने रखी । अब मैं भोलाराम का विचार जानना चाहता हूँ ।" लक्ष्मी प्रसाद ने अपने दिल को खोल दिया ।

भोलाराम लक्ष्मीप्रसाद के प्रस्ताव को कैसे अस्वीकार कर सकता था । बड़ी खुशी से भोलाराम ने लक्ष्मीप्रसाद का दामाद बनना मंज़ूर किया । भोलाराम का पारिवारिक जीवन बड़ा सुखमय बना ।
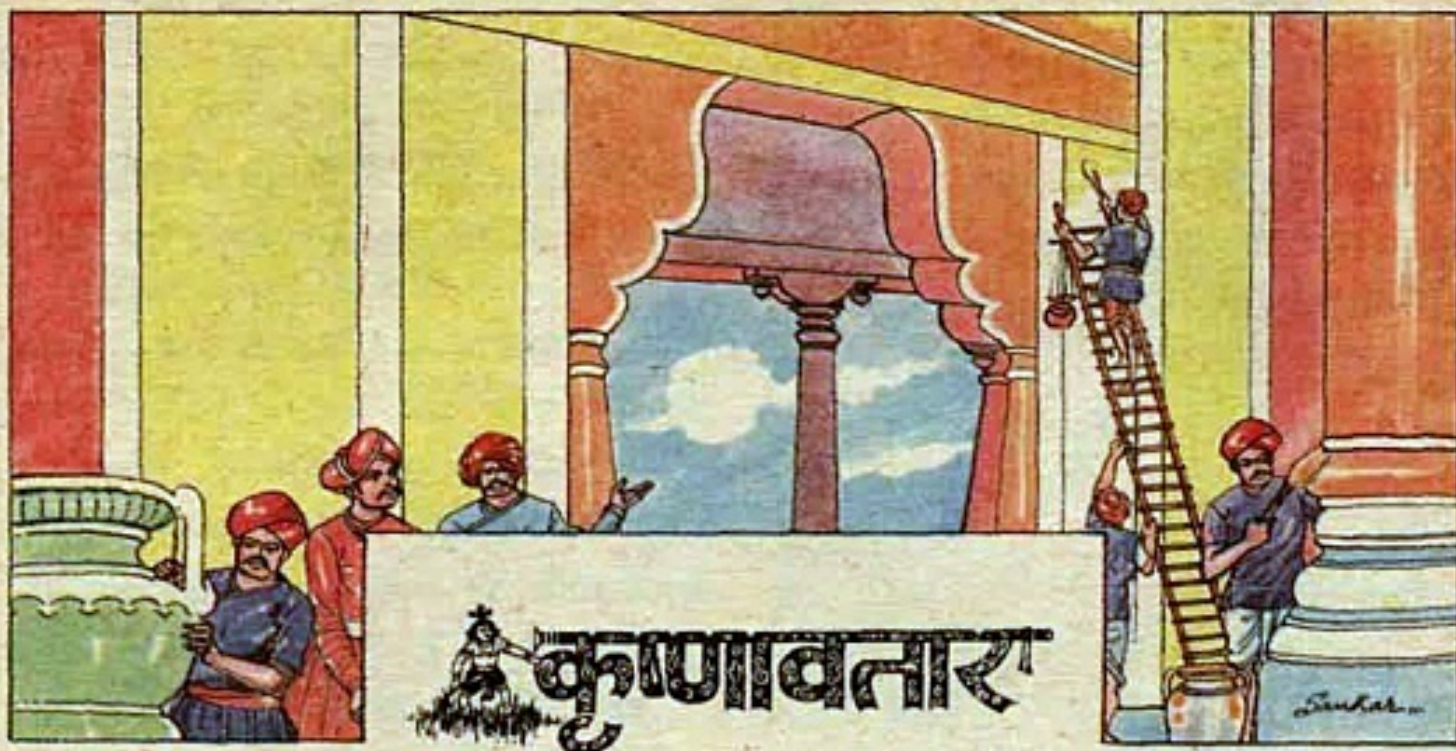
यादवों ने जरासंध आदि राजाओं की सेनाओं को पराजित कर दिया । विजय के उत्साह में उन्होंने सिंहनाद किया और विजय-दुंदुभियाँ बजाईं । फिर बलराम और सात्यकी के साथ सभी यादव द्वारका के लिए चल पड़े । द्वारका के पथ पर चलते चलते वे विजय-गीत गाते चले । आगे मंगल-वाद्य की ध्वनियाँ सब का जोश बढ़ाती थीं । उत्साह के आवेश में यादव-युवकों ने बलराम को अपने सर पर लिया । ऐसा अपूर्व उत्साह पहले कभी देखा नहीं गया था ।

जब श्रीकृष्ण रुक्मिणी को लेकर चले गये, तब श्रुतपर्व ने रुक्मि को अपने रथ पर बिठा लिया और चल निकले । पर रुक्मि ने प्रतिज्ञा की थी कि वह अपनी बहन रुक्मिणी को साथ लिये बगैर कुंडिनपुर में प्रवेश नहीं करेगा । अब उसकी प्रतिज्ञा विफल हो गई थी, इसलिए उसने भोजकटक नाम की नगरी का निर्माण किया और वहीं पर रहने लगा । अपने पराजय की व्यथा उसे खाये जा रही थी । श्रीकृष्ण को पराभूत करना अपने बाएँ हाथ का खेल है यह उसका विचार ग़लत निकला । युद्ध-भूमि से लज्जित होकर लौटे रुक्मि को अपने जनों में उठता-बैठना मुश्किल हुआ । किसी को मुँह दिखाते उसे शर्म लगती थी । इसलिए भोजकटक में अपने महल में अकेला बैठकर दुख के आँसू पी रहा था । उसकी यह दैन्यावस्था आसपास के लोगों से देखी नहीं जा रही थी ।

होश में आने के बाद जरासंघ ने अपनी बिखरी सेना का पुनः संगठन किया और अपमानित शिशुपाल को साथ लिये अपने देश

को लौट गया ।

यादव-कुल के बुजुर्गों ने श्रीकृष्ण के विवाह का मुहूर्त सुनिश्चित किया और सभी रिश्तेदारों तथा देश-देश के राजाओं को निमंत्रण-पत्रिकाएँ खाना कीं । द्वारका नगरी को भली भाँति सुशोभित और अलंकृत किया गया । मणि-जडित वस्त्रों को कुंकुम-पुष्पों से साफ करके उन्हें खूब चमका दिया । सुवर्ण-स्तंभों पर लपेटे वस्त्र हटा दिये गये । अब उन पर अंकित कारीगरी स्पष्ट दिखाई देने लगी । सर्वत्र फर्श पर कस्तूरी का सुंगधित जल छिड़क कर उनको चमकीला बना दिया गया । विविध प्रकार की मोतियों की रंगोलियाँ अत्र-तत्र अंकित की गईं । स्थान-स्थान पर सुपारी के पत्रों के तोरण बाँध दिये गये । चीनांबरों से निर्मित ध्वजाएँ सर्वत्र फहरने लगीं । घर घर में युवतियाँ और कुमारियाँ श्रीकृष्ण की यशोगाथा का गान करने लगी । कहीं कहीं इन गीतों ने नृत्य-गीतों का रूप ग्रहण किया । विवाह-समारोह में जाने के लिए सभी ने अपने उत्तमोत्तम वस्त्र पहन लिये । विविध पुष्पों व अलंकारों से अपने शरीरों को सजाया । द्वारका की वीथियों पर सज-धज के साथ विवाह-मंडप की ओर जानेवाले महिलाओं के गुट दिखाई दे रहे थे ।

आज की घड़ी उन सब के जीवन में एक अभूतपूर्व समय था । ऐसा दिन न कभी आया था, न आएगा । सब के अंतःकरण एक अद्वितीय आनन्द से आप्लावित थे । आज द्वारका का समग्र रूप ही बदल गया था ।

श्रीकृष्ण के विवाह-समारोह में संमिलित होने के लिए कई देशों के राजा अपने रथ, हाथी तथा घोड़ों के साथ बड़े आदर व स्नेह-भाव से वैभवपूर्ण ढंग से आ पहुँचे । उसी प्रकार सारे रिश्तेदार भी आ गये । ऐसी शुभ घड़ी में श्रीकृष्ण के दर्शन करके अपनी तपस्या को सफल बनाने के हेतु मुनिवृन्द द्वारका पहुँच गये । इनके अतिरिक्त अनेक देशों से चतुर्विध वर्णों के प्रमुख विवाह-समारोह में पधारे । सात्यकी ने अभ्यागतों का उचित आतिथ्य किया तथा उनके निवास का अच्छा प्रबंध किया ।

विवाह के दिन ब्राह्मणों का वेद-पठण, सेवकों के द्वारा राजाओं का किया गया गुणगान, स्त्रियों के चलते उनके आभूषणों की

मधुर ध्वनि, घोडों की हिनहिनाहटें, विवाह के मंगल वाद्य और आसमान में देवों की दुंदुभियाँ - सब के मिले-जुले स्वर एक अभूतपूर्व मिश्र संगीत का निर्माण करते थे, जिसे सुनते ही बनता था ।

चार सुवर्ण-स्तंभों पर एक विवाह-मंडप की रचना की गई और उसे रंगबिरंगे रत्नों और सुगंछित पुष्पों से सजाया गया । उसके मध्य में मणि-जडित वेदी के चारों तरफ चित्र-विचित्र रंगोलियाँ आरेखित की गईं । फिर यों अलंकृत वेदी पर श्रीकृष्ण विराजमान हुए । श्रीकृष्ण के चारों तरफ उग्रसेन, वसुदेव, बलराम, बुज़ुर्ग यादव और मुनि-वृन्द आसनस्थ हुए । पुरोहितों ने विवाह का अग्नि-कुंड प्रज्वलित किया । उनकी पत्नियाँ आवश्यक सभी सामग्री उनके पास पहुँचाते में दत्त-चित थीं । हवन की सामग्री में सुगंधित वनस्पतियाँ भी पर्याप्त मात्रा में थी । विवाह-स्थान पर अग्नि-कुंड से निकलनेवाला धुआँ सर्वत्र सुगंधि फैला रहा था । इधर पुरोहितों ने समयोचित संस्कृत ऋचाओं व मंत्रों का पाठ शुरू किया ।

मुहूर्त का समय आ गया । तब कोमलता, सुशीलता, सौंदर्य और सौभाग्य की मानो प्रतिमूर्ति रुक्मिणी के साथ श्रीकृष्ण ने पाणिग्रहण किया । उस वक्त सुमंगलियों ने श्रीकृष्ण पर अक्षत छिड़के तथा आकाश से देवियों ने पुष्प-वृष्टि की । श्रीकृष्ण ने अपने माता-पिता तथा समस्त ज्येष्ठ व्यक्तियों को प्रणाम किया और उनसे शुभाशीर्वाद प्राप्त किये । इसके बाद श्रीकृष्ण ने अनेक ब्राह्मण-पुरोहितों को आठ हज़ार रथ, ग्यारह हज़ार पाँच सौ हाथी, अनगिनत घोड़े तथा गायों को दान दिया ।

अनेक दास-दासियों को आभूषण, सोना और चाँदी उपहार-स्वरूप दिये । इसी प्रकार सूत, मागधी, नर्तक, बन्दीजन आदियों को असंख्य पुरस्कार प्रदान किये । अंत में सब को स्वादिष्ट भोजन देकर संतुष्ट किया । विवाह में पधारे सभी लोगों ने श्रीकृष्ण को उपहार दिये और प्रति-उपहार पाये ।

विवाह-समारोह की समाप्ति पर अभ्यागत घर लौटने लगे - संपूर्ण संतोष के साथ । विवाह के पूरे आयोजन की प्रशंसा करते उनके होंठ थकते न थे । विवाह-समय के दृश्यों को कवि-गणों ने अपनी अमर गिरा में काव्य-बद्ध किया ।

बालक-बालिकाओं के मन की अवस्था कुछ ऐसी थी कि वे अपने माता-पिता के साथ अपने घर जाने को तैयार नहीं थे । हठी बालक माँ से कहते थे - "माँ, यहीं रहेंगे न और दो-चार दिन ! घर जाने की ऐसी क्या जल्दी है ? जाना ही हो तो कल चलेंगे, आज नहीं । माँ, इतनी बिनती नहीं मानोगी क्या ?"

श्रीकृष्ण ने रुक्मिणी के साथ दांपत्य-जीवन बिताते हुए परम सुख का अनुभव किया । श्रीकृष्ण ने मित्रविंदा, जांबवती, सत्यभामा, कालिंदी, सुदंता के साथ भी विवाह कर लिया ।

विवाह के कुछ समय बाद श्रीकृष्ण की ज्येष्ठ पत्नी रुक्मिणी गर्भवती हो गई । श्रीकृष्ण ने अपनी वंशगत प्रथा के अनुसार पुंसवन, सीमंत आदि संस्कार व उत्सव वैभवपूर्वक मनाये । यथासमय रुक्मिणी ने एक पुत्ररत्न को जन्म दिया । प्राचीन काल में शिवजी के तृतीय नेत्र की ज्वाला में भस्मीभूत मन्मथ ने ही रुक्मिणी के गर्भ से जन्म लिया था । बड़े ठाठ से पुत्र का नामकरण किया गया । नाम रखा गया प्रद्युम्न ।

क्रूर राक्षस शंबर को पहले से ही मालूम था कि रुक्मिणी के पुत्र द्वारा उसकी मृत्यु निश्चित है । इसलिए उसने एक चाल चली । रुक्मिणी की बगल में सोये शिशु प्रद्युम्न को आधी रात बीते वह चुरा लाया और उसे समुद्र में फेंक दिया । उस शिशु को एक बड़ी मछली ने निगल लिया । एक मछुए ने उस मछली को अपने जाल में पकड़ा । इतनी बड़ी मछली हाथ आने पर मछुआ फूला न समाया और उसने उस भारी मछली को रानी मायावती को उपहार-स्वरूप दे दिया । शंबर इक्षुमती का राजा था और

मछुआ इक्षुमतीपुर का एक नागरिक । रानी मायावती शंबर की पत्नी थी ।

मछुए की दी मछली को मायावती ने स्वयं काटा, मछली के पेट से निकले सुंदर शिशु को पाकर वह बहुत खुश हुई । उसने शिशु को पाल-पोसकर बड़ा किया । शंबर के अपनी कोई संतान न थी, उस शिशु को देखकर शंबर भी मुग्ध हो गया ।

मायावती की देख-रेख में पलकर प्रद्युम्न ने सारी राक्षस-मायाएँ सीख लीं । साथ साथ अन्य सभी विद्याओं का अध्ययन कर प्रद्युम्न बड़ा सुयोग्य युवक बन गया । युवावस्था प्राप्त होने पर वह अतीव सुंदर और आकर्षक लगने लगा । जिस मायावती ने बचपन से ही प्रद्युम्न का पालन-पोषण किया था, उसने एक दिन अनुरोध किया कि प्रद्युम्न उसके साथ विवाह करे । इस अनुरोध पर प्रद्युम्न ने मायावती को समझाया - "तुम मेरी माँ हो और मैं तुम्हारा पुत्र हूँ । आश्चर्य की बात है कि तुम्हारे मन में मेरे प्रति यह अनुचित लालसा पैदा हुई । इसके पीछे ज़रूर कोई रहस्य है । खोलकर बताओगी माँ ?"

मायावती ने रहस्य का उद्‍घाटन किया - "सुनो वत्स, यादव वंश के उद्धारक श्रीकृष्ण तुम्हारे पिता है और तुम्हारी माँ है रुक्मिणी । तुम्हारे जन्म के कुछ ही दिनों बाद शंबर ने तुम्हें चुरा लिया और समुद्र में फेंक दिया । संयोग की बात है कि तुम यहाँ पहुँच गये । आज तक मैंने तुम्हारी रक्षा की । तुम्हारी माँ रुक्मिणी पुत्र-वियोग से बहुत ही व्याकुल है । तुम शीघ्र ही उससे मिलो । मेरे प्रस्ताव को ठुकराना नहीं । शंबर को माया-मोह में डालकर मैं आज तक अभिनय करती आयी हूँ कि मैं उसकी पत्नी हूँ । वास्तव में वह हमारा शत्रु है, इस का वध करना ही तुम्हारा धर्म है । "

मायावती से सारा वृत्तान्त जानकर प्रद्युम्न ने शंबर को युद्ध के लिए ललकारा । दोनों के बीच घमासान लड़ाई हुई । इस युद्ध में प्रद्युम्न ने शंबर पर सात प्रकार की मायाओं का प्रयोग किया, पर उसकी एक न चली । अंत में उसने आठवीं माया का प्रयोग किया, तब उसे सफलता मिली । उसने शंबर का संहार किया ।

अब प्रद्युम्न मायावती को साथ लिये माया के प्रभाव से आकाश-पथ से होकर श्रीकृष्ण के

अंतःपुर में उतर पड़ा । अकस्मात उतरे प्रद्युम्न को देख श्रीकृष्ण की पत्नियाँ भयभीत हुईं । साथ ही उसकी अनुपम रूप-संपदा पर प्रसन्न भी हुईं । उस लावण्य-संपन्न युवक को देख रुक्मिणी ने मन-ही-मन सोचा कि यदि उसका पुत्र जीवित होता, तो वह भी इसी आयु का होता । श्रीकृष्ण ने उस युवक को देखा तो वे भी अतीव प्रसन्न हो गये ।

इतने में नारद ने वहाँ प्रवेश किया और श्रीकृष्ण को प्रद्युम्न की सारी कहानी सुनायी । तब सब बात स्पष्ट हो गई कि यह प्रद्युम्न रुक्मिणी का ही पुत्र है । मायावती भी अपने पिछले जन्म में मन्मथ की पत्नी रति थी । वह इस जन्म में भी पुनः उसकी पत्नी हो गई । मन्मथ के भस्म होने पर वह शंबर के हाथ में फँस गई थी । माया-रूप धारण कर शंबर को चकमा देते हुए वह अपने पातिव्रत्य की सुरक्षा कर सकी थी ।

अपने पुत्र प्रद्युम्न को पाकर रुक्मिणी को अपार हर्ष हुआ । श्रीकृष्ण की सभी पत्नियाँ परमानंदित हो गईं । उन्होंने अंतःपुर में अनेक उत्सव मनाये ।

प्रद्युम्न के बाद रुक्मिणी ने क्रमशः नौ पुत्रों को जन्म दिया और अंत में एक पुत्री को । प्रद्युम्न के बादवाले रुक्मिणी के पुत्रों के नाम हैं - चारुधेष्ण, सुधेष्ण, सुषेण, चारुगुप्त, चारुवाहन, चारुविंद, चारुभद्र, चारुगर्भ तथा चारु । अंतिम पुत्री का नाम है चारुमती । श्रीकृष्ण के अन्य पत्नियों ने भासु, भानुविंद, संग्रामजित. दीप्तिमंत, वृक आदि अनेक पुत्रों को और मित्रवती आदि अनेक पुत्रियों को जन्म दिया ।

प्रद्युम्न के जन्म के एक महीने बाद जांबवती के एक पुत्र हुआ, जिसका नाम है सांब । सांब अत्यन्त विख्यात था । उसको बचपन से ही बलराम ने अपने आश्रय में लिया और अपने पुत्र की तरह उसका लालन-पालन किया । उसको सभी अस्त्र-शस्त्र विद्याएँ सिखा दीं । बलराम के रेवती द्वारा निशात और उल्मक नाम के दो पुत्र हुए । इस प्रकार बलराम तथा श्रीकृष्ण अनेक पुत्रों को जन्म देकर सुखपूर्वक जीवन-यापन करने लगे ।

विदर्भ देश में रुक्मिणी के बड़े भाई रुक्मि के एक पुत्री थी, जिसका नाम था शुभांगी । शुभांगी विवाह के योग्य हो गई थी । उसके

विवाह के लिए रुक्मि ने स्वयंवर का आयोजन किया और पृथ्वी के सभी राजाओं के पास निमंत्रण-पत्र भेजे । उस स्वयंवर में संमिलित होने के लिए कई राजा आ पहुँचे । अपने माता-पिता की अनुमति से प्रद्युम्न भी सदलबल उस समारोह में उपस्थित रहा । बड़ी धूमधाम से स्वयंवर संपन्न हुआ । शुभांगी ने पहले ही प्रद्युम्न के रूप-गुणों के बारे में जान लिया था, और उसीको वरने का अपने मन में निश्चय कर लिया था । इस लिए स्वयंवर मंडप में उसने प्रद्युम्न के गले में वरमाला डाली । स्वयंवर में पधारे सभी राजाओं ने शुभांगी के निर्णय की प्रशंसा की । सब ने कहा - अनुरूप वधू और वर का ऐसा जोड़ा दुर्लभ है ।

शुभांगी के साथ विवाह करके प्रद्युम्न घर लौट आया । यथासमय इस दंपति के एक पुत्र हुआ, जिसका नाम अनिरुद्ध रखा गया । धीरे धीरे अनिरुद्ध ने सभी शास्त्र तथा अस्त्र-शस्त्र विद्याओं का अध्ययन किया । अब वह विवाह करने की अवस्था में पहुँचा ।

रुक्मि के पुत्र की एक लड़की थी, उसका नाम था रुक्मवती । श्रीकृष्ण ने सोचा - रुक्मवती अनिरुद्ध के लिए सुयोग्य वधु है । उसने प्रद्युम्न को सुझाया कि वह इस संबंध में रुक्मि से संपर्क स्थापित कर बातचीत करे । श्रीकृष्ण की इच्छा जानकर प्रद्युम्न ने रुक्मि के पास अपने दूत द्वारा संदेश भेजा ।

अपनी पुरानी शत्रुता भूलकर रुक्मि ने भी इस विवाह को संमति दी । विवाह का मुहूर्त निश्चित हुआ । इस विवाह में संमिलित होने बलराम, श्रीकृष्ण, प्रद्युम्न, उनके सभी पुत्र, रुक्मिणी, तथा यादव परिवार के प्रमुख सदस्य चल पड़े । यह विवाह अत्यन्त वैभवपूर्वक संपन्न हुआ ।

सर्वत्र अपूर्व उत्साह छाया हुआ था । उस वक्त वेणुधारी, श्रुतपर्व, अंशुमंत, जयत्सेन इत्यादि दक्षिण के वीरों ने रुक्मि को समझाया - "तुम तो जुआ खेलने में कुशल हो, बलराम को जुआ खेलने के लिए प्रेरित करो । उसको जुए का बड़ा शौक़ है । जुए में उसको हराकर हम यश प्राप्त करेंगे ।"

किसान और भेड़िया

इस समय फ्रान्स में जहाँ पर एक विशाल मैदान है, वहाँ पर किसी ज़माने में एक बहुत बड़ा जंगल था । उस जंगल के भस्म हो जाने का कारण यों बताया जाता है ।-

जंगल के एक छोर पर एक ग़रीब किसान अपनी पत्नी के साथ रहा करता था । एक दिन किसान ने दो बड़ी रोटियाँ खरीद लीं, और जंगल के रास्ते से होकर वह घर की ओर निकला । इतने में झुरमुट में से एक भेड़िया बाहर निकला और उसने किसान का मार्ग रोका । भेड़िया एकदम दुबला था, अस्थि-पंजर मात्र रह गया था । किसान की ओर देखकर वह ज़ोर से गरजा । उसकी डाढ़ें बड़ी लंबी और भयानक थीं ।

भेड़ियें को देखकर किसान घबरा गया । उसके लिए वहाँ से भाग जाना संभव न था और साथ ही उससे लड़ना भी मुश्किल था । यकायक आन पड़े संकट का मुकाबला कैसे करे इस संबंध में सोचता रहा । इतने में बिजली की भाँति उसके दिमाग़ में एक उपाय कौंध गया । नम्रता के साथ उसने भेड़िये से पूछा - "भैया, क्या तुम्हें भूख लगी है ? तुम्हारा शरीर तो जीर्ण-शीर्ण दिखाई दे रहा है । लगता है, बहुत दिन तुम्हें खाने को कुछ नहीं मिला है । मैं तुम्हारी बहुत अधिक मदद तो नहीं कर सकूँगा । लो, थोड़ी-सी रोटी खा लो ।" कहते हुए किसान ने रोटी का एक टुकड़ा उसके आगे फेंक दिया । भेड़िया प्रेम से रोटी का टुकड़ा खाने लगा । भेड़िये को रोटी का वह टुकड़ा खाकर बड़ा संतोष हुआ । भूख तो लगी ही थी । पर थोड़ी-सी रोटी खाने के बाद और रोटी खाने की इच्छा हुई । किसान ने मौक़ा पाकर खिसककर भागना शुरू किया ।

थोड़ी ही दूर तक वह भागता गया और पीछे मुड़कर देखा - भेड़िया उसका पीछा कर

फ्रान्स की एक लोककथा

रहा है । रुककर बोला – "भले भेड़िये, चाहो तो एक टुकड़ा और लो । मैं जानता हूँ, तुम्हें बहुत भूख लगी है । भूख के कारण जो कष्ट होते हैं, उनसे मैं अपरिचित नहीं हूँ । मुझे तुम पर बहुत दया आती है । पर मैं और क्या कर सकता हूँ ? मेरे पासवाली रोटी में से एक टुकड़ा और ले लो ।" – कहते हुए किसान ने रोटी का एक और टुकड़ा उसके आगे डाला और दौड़ने लगा ।

फिर भी भेड़िया उसका पीछा करता ही रहा ।

किसान जब-तब रोटी का एक एक टुकड़ा फेंकते जा रहा था । उन टुकड़ों को खाते खाते भेड़िया किसान के पीछे जाता रहा । किसान तेज़ भागने लगा, तो भेड़िया भी तेज़ी से पीछा करता गया ।

आखिर वह हाँफते हाँफते अपने घर में घुस गया । तब तक दो रोटियों में से केवल एक छोटा-सा टुकड़ा उसके पास बचा था । भेड़िया भी पीछे आकर उसके घर के सामने बैठ गया ।

किसान की पत्नी ने देखा कि पति खाली हाथ लौटा है तो पूछा – "रोटियाँ नहीं लाये ? रोटियों के साथ खाने के लिए कंजी तैयार है ।".

घबराये किसान को साँस तक लेने में कठिनाई हो रही थी । उसने मकान के बाहर बैठे भेड़िये की ओर इशारा किया ।

"अरे बाप रे, भेड़िया । इस लिए तुम दौड़े आये हो ? अच्छा हुआ, उसने आपको कुछ अपाय नहीं किया ।" किसान की पत्नी ने कहा ।

किसान ने कहा – "हमारे लिए जो रोटियाँ मैंने खरीदी थीं, वे उसके पेट में गयीं । मैं जंगल के रास्ते आ रहा था, कि यकायक सामने यह भेड़िया आया । पहले तो मैं घबरा गया । पर बाद में सोचा – भेड़िया बहुत भूखा लगता है । थोड़ी रोटी दे तो वह कुछ न करेगा । मैंने रोटी का एक टुकडा दिया और तेज़ी से आगे बढ़ा । देखा कि भेड़िया मेरा पीछा ही कर रहा है । टुकड़े डालता रहा और भागता रहा । बस, अब यह आखिरी टुकड़ा बचा है ।"

"ओह, इस कम्बख्त भेड़िये ने हमारी रोटियाँ निगल डालीं, आश्चर्य है । आप घर के अंदर आकर पहले किवाड़ बन्द कर दीजिए । वरना हम दोनों को भी वह निगल जाएगा ।" पत्नी ने पति को सावधान किया ।

किसान ने किवाड़ बन्द करते हुए रोटी का बचा टुकड़ा भी भेड़िये के आगे फेंक दिया और कहा – "लो, इस बचे टुकड़े को भी तुम्हीं खा लो ।" भेड़िये ने उस टुकड़े को भी अपने पेट में डाला और देर तक उस मकान के बाहर बैठा रहा ।

किसान और उसकी पत्नी ने केवल कंजी मात्र पीकर अपनी भूख मिटाई । किसान की पत्नी बराबर भेड़िये को कोसती रही । जब उनकी बातचीत ख़तम हुई, तो भेड़िया चुपचाप जंगल की ओर चला गया ।

यों कुछ महीने बीत गये । किसान पति-पत्नी ने कड़ी मेहनत करके कुछ रुपये जमा किये और एक गाय खरीदने का निश्चय किया ।

किसान उस धन को लेकर जंगल से होते हुए बाज़ार की ओर चल पड़ा । किसान सोच रहा था कि उसके पास जो थोड़े रुपये हैं, इनसे केवल एक बूढ़ी गाय ही खरीदी जा सकती है । इतने में एक दुबला-पतला लंबे क़दवाला आदमी उसके सामने आकर खड़ा हो गया ।

"क्या तुम गाय खरीदना चाहते हो ?" उस आदमी ने किसान से पूछा ।

किसान ने जवाब दिया – "हाँ, खरीदनी तो है । पर एक अच्छी गाय के लायक रुपया गाँठ में नहीं है ।"

"हमारे मवेशीखाने में बहुतेरी गायें हैं । देखो, जो गाय तुमको पसंद आए उसे ले जाओ ।" बुज़ुर्ग ने प्यार से कहा ।

वे दोनों साथ साथ एक अच्छे मकान में पहुँचे । मकान के पिछवाड़े एक बड़ा मवेशीखाना था ।

बुज़ुर्ग ने कहा – "बढ़िया से बढ़िया गाय चुन लो । पैसे की चिन्ता न करना ।" किसान ने एक बढ़िया गाय चुन ली ।

"तुमने तो बहुत ही अच्छी गाय का चुनाव कर लिया है ।" कहते हुए बुज़ुर्ग ने गाय के गले में एक पगहा बाँध दिया और उसके छोर को किसान के हाथ में पकड़ा दिया ।

बाद में उसने अपनी जेब में से एक डिबिया निकाली और उसे किसान के हाथ देते हुए बोला – "मेरी ओर से यह तुम्हारी पत्नी के लिए छोटी-सी भेंट है । तुम मत देखना कि उसके अन्दर क्या है । पत्नी को खुद देखने दो ।"

डिबिया हाथ में लेते हुए किसान ने पूछा –

"मेरे प्रति आप इस कदर मिहरबान क्यों हैं ?"

बुज़ुर्ग ने मुस्कुराते हुए कहा - "तुमने एक बार दया करके मुझे दो रोटियाँ खिला दी थीं । मैं वही भेड़िया हूँ । भलों के लिए मैं भला और दुष्टों के लिए दुष्ट हूँ । अब तुम जाओ, भगवान तुम्हारा भला करें । "

यह सुनकर किसान को बड़ा आनन्द हुआ । वह गाय को हाँकते हुए जंगल के रास्ते घर की ओर निकल पड़ा ।

रास्ते में किसान के मन में बराबर यह जिज्ञासा रही कि डिबिया में क्या है ? भेड़ियावाले आदमी ने यह क्यों कहा कि उसकी पत्नी ही स्वयं एकान्त में डिबिया खोल दे । किसान ने उलट-पलट कर सूँघकर डिबिया को देखा, पर उसे पता न चला कि अन्दर क्या है ।

उसने सोचा आखिर पत्नी और उसके बीच कोई रहस्य की बात थोड़े ही है । डिबिया खोलने के बाद वह ज़रूर बताएगी कि उसके अन्दर क्या है ? उस हालत में घर पहुँचने तक प्रतीक्षा क्या करनी है ? फिर डिबिया खोलने का उसने निश्चय कर लिया ।

उसने एक बड़ा वृक्ष देखा और उसकी घनी छाँव में बैठ गया । गाय को चरने के लिए छोड़ दिया और धीरे से डिबिया का ढक्कन खोला । दूसरे ही क्षण उसने डिबिया को नीचे गिरा दिया और दूर जा खड़ा हुआ । डिबिया के अंदर से आग की भयंकर लपटें निकल आईं । उन लपटों से पेड़ की डालें जलने लगीं ।

"अरे बाप रे । अगर मेरी पत्नी यह डिबिया खोल देती तो उसका चेहरा और बाल जल जाते । भेड़ियेवाले आदमी को मेरी पत्नी ने गालियाँ दी थीं, शायद इसलिए उसने यों बदला लेना चाहा होगा । " किसान सोचता रहा ।

अब सारा वृक्ष जल रहा था । किसान अपनी गाय को लेकर घर पहुँचा । उसी आग ने उस जंगल के बहुत बड़े हिस्से को राख कर दिया ।

पर किसान पति-पत्नी गाय को पालते हुए वर्षों तक सुख के साथ अपना जीवन-यापन करते रहे ।

किसी शहर के एक सरकारी दफ़्तर में छोटे ओहदे पर एक युवक की नियुक्ति हुई । उसका नाम था मुरारी । उसकी पत्नी का नाम था कामाक्षी । शहर में किराये का मकान मिलना आजकल मुश्किल हो गया है । मिला भी तो बहुत भारी किराया देना पड़ता है ।

माली हालत ठीक न होने के कारण नये जोड़े ने शहर से थोड़ी दूर पर कम किरायेवाला एक मकान ढूँढ़ लिया ।

कामाक्षी अपने नये घर में सारा सामान ठीक-ठाक लगा रही थी । इसी समय एक व्यक्ति ने घर में प्रवेश करके पूछा-"बहनजी, सब कुशल है न ? नया मकान पसंद आ गया ?"

उस युवक के पीछे एक युवती आ धमकी । उसने कहा - "भाभीजी, मकान बहुत अच्छा तो नहीं है । कमरा हवादार नहीं है । अगर यही कमरा तीसरी मंजिल पर होता, तो अच्छी हवा आती । आजकल किराये के मकान मिलते ही कहाँ है ? फिर कम किरायेवाले मकान तो बड़ी मुश्किल से मयस्सर । तुमको यह मकान मिल गया गनीमत समझो । घर में प्रवेश करते ही हमारी भाभी को साथ काम करना पड़ रहा है । "

मुरारी ने अपनी पत्नी को उन दोनों का परिचय करा दिया - "सुनो, ये दोनों मियाँ-बीवी हैं - जनार्दन और जानकी । इनका मकान यहाँ पास में ही है । दोनों बड़े मिलनसार हैं । कभी ज़रूरत पड़े तो हमारी मदद करने के लिए दौड़े आएँगे । दूध हो, तो चलो झटपट चाय बनाओ । फिर हम सब मिलकर शाम तक सारा घर ठीक-ठीक लगा देंगे । जनार्दन और जानकी का साथ हो तो चिन्ता किस बात की ?"

इसके बाद जानकी ने रसोई बनाने में कामाक्षी की मदद की, और जनार्दन ने घर का सामान सजाने में मुरारी की सहायता की ।

शशिकला जोशी

फिर बात-चीत करते हुए सब ने खाना खा लिया । अंधेरा होने पर जनार्दन-जानकी अपने घर चले गये ।

कामाक्षी ने प्रसन्नता के साथ कहा - "इनकी मदद से चार दिन का काम एक दिन में हो गया । पड़ोसी हों तो ऐसे हों । अपने पहलेवाले मकान में हमको मनचाहे पड़ोसी नहीं मिले । हमेशा किसी न किसी बात पर झगड़ा चलता । घर में ज़रा भी शांति न थी । इस मकान में अब वह परेशानी नहीं होगी । भगवान की कृपा हो तो सब कुछ ठीक हो जाता है । "

पर उसकी यह प्रसन्नता बहुत दिन टिकी न रह सकी ।

प्रति दिन कामाक्षी रसोई बनाकर मुरारी को खिला देती । जब उसका पति दफ़्तर चला जाता, तो जानकी आकर बैठ जाती । उसके सामने खाना खाने में कामाक्षी को संकोच होता । इसलिए उसका खाना दोनों बाँट कर खा लेतीं । इसके साथ ही जानकी शाम तक कामाक्षी को कुछ न कुछ सुनाया करती । उसकी बातें सुनकर कामाक्षी के कान पक जाते । दोपहर के समय थोड़ी आराम की नींद सोना भी मुश्किल हो जाता ।

इधर मुरारी घर से दफ़्तर लौटता, तो जानकी का पति जनार्दन आ टपकता । दोनों बैठक के पासवाले कमरे में बैठ जाते और बातचीत का सिलसिला चला चलता । मुरारी के साथ जनार्दन भी शाम का नाश्ता कर लेता, और अंधेरा हो जाने पर अपने घर चला जाता । कामाक्षी नई नई गृहस्थी में प्रवेश कर चुकी थी, इसलिए कुछ दिन तक सब चुपचाप सहन
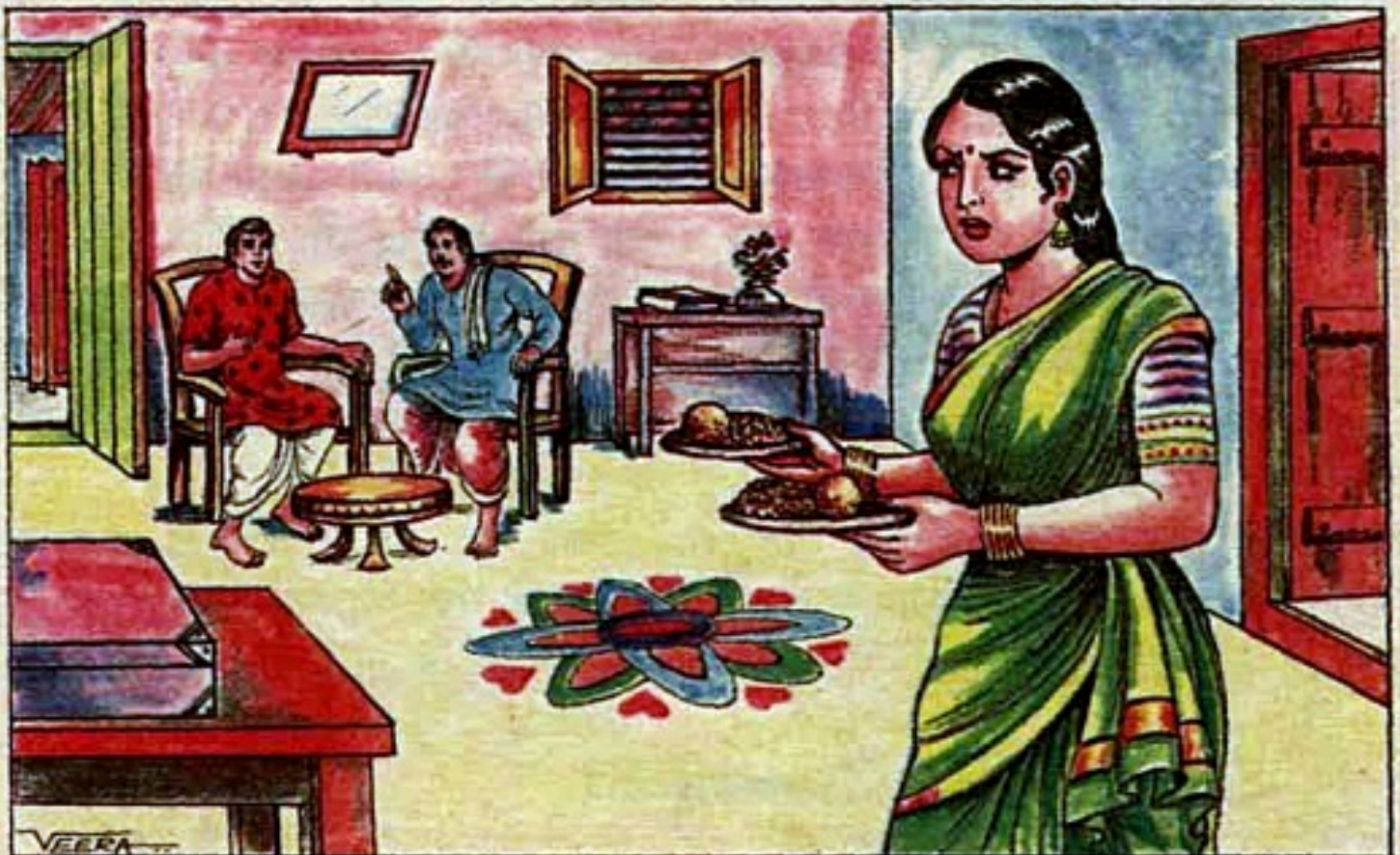
करती रही ।

एक दिन कामाक्षी ने अपने पति से कहा – "ये जनार्दन-जानकी मानो हमारे पीछे पड़े हैं इनके कारण शाम के समय हम नदी किनारेवाले मंदिर में भगवान के दर्शन भी नहीं कर पाते । यह क्या झंझट है ?"

पत्नी की बातें सुनकर मुरारी मौन रह गया गृहस्थी बसाने के एक हफ़्ते भर में कामाक्षी ने जान लिया कि उसके पति बड़े संकोच वृत्ति के हैं ।

कामाक्षी ने पति को सलाह दी – "कल शाम को जनार्दन के आते ही हम उसे कह देंगे – "हमें मंदिर जाना है । और घर से निकल पड़ेंगे । "

"क्या ऐसा करना सभ्यता के खिलाफ़ न होगा ?" मुरारी ने पत्नी से पूछा । कामाक्षी समझ गई कि अपने पति को कुछ समझाना बेकार है । उसने स्वयं ही कुछ करने का निर्णय लिया ।

एक सप्ताह के बाद जनार्दन को किसी काम से बाहर गाँव जाने की ज़रूरत पड़ी । मुरारी के पास पहुँचकर उसने कहा – "देखो भाई, मैं दो दिन में लौटूँगा । बीवी की तबीयत ज़रा नासाज़ है । अगर बाज़ार से कुछ लाने की ज़रूरत पड़े, तो कृपया ला दीजिए । "

दूसरे दिन दफ़्तर जाते समय मुरारी जनार्दन के घर पहुँचा । जानकी ने उसके हाथ एक चिट्ठी दी और कहा – "भाई साहब, दफ़्तर से लौटते समय इस सूची में लिखा सामान लाने का कष्ट करेंगे ?"

पूरा सामान खरीदने के लिए मुरारी को अपनी ज़ेब से दो सौ रुपये खर्च करने पड़े ।

दो दिन बाद जनार्दन गाँव से लौट आया । दस दिन गये, पर जनार्दन ने सामान के रुपये मुरारी को देने का नाम नहीं लिया ।

कामाक्षी ने सोचा कि अब एक बार पूछ लेना चाहिए । तभी रुपये मिल सकते हैं । जब जानकी आई तो उसने पूछा - "बहन, सामान के दो सौ रुपये जनार्दन भैया ने अब तक नहीं दिये हैं । ज़रा याद दिला दो न ?"

इस पर जानकी ने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा - "क्या कहा ? उस थोड़े से सामान के लिए दो सौ रुपये खर्च हो गए हैं ? हमारे घरवाले तो सौ रुपये में इससे दुगुना सामान ले आते हैं ।"

यह बात सुनकर कामाक्षी को बहुत ग़ुस्सा आया । इसके बाद एक बार मुरारी को भी बाहर गाँव जाना पड़ा । जब वह जाने निकला तो कामाक्षी ने कहा - "आपके लौटने में दो दिन तो लग ही जाएँगे न ? आप जनार्दन ने हाथ में सौ रुपये देकर कह दीजिए कि अगर किसी चीज़ की ज़रूरत पड़ी तो वे मेरी मदद करें ।"

मुरारी ने कुछ क्रोध से कहा - "क्या कहती हो ? कहीं पागल तो नहीं हो गई न ? पहले ही दो सौ रुपयों से हाथ धो बैठे, अब एक सौ और फूँक दें क्या ?"

"अजि आप नाराज़ मत हूजिए । जनार्दन से सारे रुपये वसूल करने की ज़िम्मेदारी मेरी है ।" कामाक्षी ने समझाया ।

अब मुरारी ने जनार्दन के हाथ एक सौ रुपये दिये, और आवश्यक समाचार देकर वह गाँव के लिए चल पड़ा ।

दूसरे दिन जनार्दन ने आकर पूछा - "बहनजी, बाज़ार से कुछ सामान लाना है क्या ?"

"भैया, सामान से भी अधिक ज़रूरी एक काम है ।" जनार्दन के सामने नाश्ता रखते हुए आँखों में आँसू लाकर कामाक्षी बोली - "मेरे पतिदेव मेरे मायकेवालों से चिढ़ते हैं । मेरे छोटे भाई की पढ़ाई के लिए इस वक्त पिताजी के पास पैसे नहीं हैं । अपनी माँ से मिली सोने की चूड़ियाँ चुपचाप मैं बेचना चाहती हूँ । सुनिये, यह खबर मेरे पति के कानों तक बिलकुल पहुँच न पाए । समझें ?"

सोने की बात सुनते ही जनार्दन आतुर हो उठा । बोला, - "बहनजी, कहाँ हैं चूड़ियाँ, लाओ तो ।"

कुछ देर मौन रहकर कामाक्षी ने कहा – "आज तो एक नया संकट आन पड़ा है । मेरे छोटे भाई की फीस शहर में आज ही चुकानी है । तीन सौ रुपयों का खर्चा है । आज शुक्रवार है, शुक्रवार के दिन चूड़ियाँ बेचना मंगलदायक नहीं है । कुछ समझ में नहीं आता मैं इस समय क्या करूँ ?"

जनार्दन ने तत्काल कहा – "बहनजी, मुझे आपको दो सौ रुपये देने हैं । कल मुरारी मेरे हाथ सौ रुपये दे गया है । मैं वे तीन सौ रुपये अभी ला देता हूँ । उन्हें तुम छोटे भाई के पास भेज सकती हो । चूड़ियाँ कल बेच सकते हैं ।"

कामाक्षी ने स्वीकृति दी । जनार्दन उसी वक्त घर गया और तीन सौ रुपये ला दिए ।

दूसरे दिन जनार्दन सोने की चूड़ियाँ ले जाने के लिए कामाक्षी के घर पहुँचा । उसने देखा कामाक्षी उदास हो आँसू ढा रही है । जनार्दन को देखते ही वह ज़ोर से रो पड़ी । कहा – "मेरा तो घर लुट गया । पिछली रात चोरों ने आकर मेरे सोने की चूड़ियों के साथ कई कीमती चीज़ें लूट लीं । अब थोड़े दिन तुम्हीं को हमें संभालना पड़ेगा ।

कामाक्षी की बातें सुनकर जनार्दन घबड़ा कर बोल उठा – "बहनजी, अभी अभी मुझे समाचार मिला है कि मेरी सास की तबीयत ख़राब है । उसकी उम्र भी काफ़ी हो चुकी है । जाने क्या होगा । मैं ससुराल से लौटते ही तुम्हारे पास आऊँगा ।" जनार्दन तेज़ी से वहाँ से चल पड़ा ।

यों दो दिन बीत गये । जनार्दन या उसकी पत्नी ने कामाक्षी के घर में कदम न रखा । रास्ते में कहीं यदि मुरारी के साथ जनार्दन की अचानक मुलाक़ात हो जाती तो वह बचकर निकल जाता ।

समस्या सुलझ गई । मुरारी ने पत्नी की तारीफ़ करते हुए कहा – "वाह ! तुमने छोटा-सा स्वांग रचकर जनार्दन और जानकी से पिंड छुड़ाया । बड़ी ही चालाक़ हो तुम ।"

कामाक्षी ने मुस्कुराते हुए पतिदेव दे कहा – "आपमें जो संकोचशीलता है, वह दूर होने तक मुझे चालाक़ बनना ही पड़ेगा ।"

एक आने में ऐश्वर्य

एक गाँव में रतन नाम का एक किसान रहता था । एक ज़मीनदार के पास मज़दूरी करके वह अपने परिवार को ज्यों-त्यों संभालता था । ज़मीनदार के मवेशीखाने में ही एक कोने में वह अपनी पत्नी व बच्चों के साथ रहता था । एक दिन रात के समय पत्नी ने रतन से पूछा – "सुनोजी, कई वर्षों से हम मज़दूरी तो करते ही आए हैं, फिर भी पेट भरना मुश्किल होता है । अगर ऐसी ही हालत रही तो भविष्य में हमारे बच्चे क्या भगवान के भरोसे जीऐंगे ? हम तो बस मज़दूरी ही करते आये ज़िंदगी भर । बच्चों को पढ़ाना-लिखाना पड़ेगा । तभी तो वे अच्छी तरह सुख से जीवन बिताएँगे । माँ-बाप की हैसियत से यह हमारा फ़र्ज़ है । अगर हम इसे पूरा न करेंगे तो उनके प्रति अन्याय न होगा ? "

मैं व्यापार करूँ तो बहुत-सा धन कमा सकता हूँ, लेकिन व्यापार के लिए पूँजी की ज़रूरत होती है । मुझे में बुद्धि की कमी नहीं है । अगर पूँजी के रूप में मेरे पास १ आना भी होता, तो मैं उसके एक हज़ार बना देता । पर वह आना ही कहाँ है ?" किसान ने बीवी के सामने अपने कठिनाई पेश की ।

पति-पत्नी की ये बातें दीवार के उस पार खड़ा ज़मीनदार सुन रहा था । उसने सोचा कि चलो देखें, उसका नौकर एक आना लेकर कौनसा व्यापार करता है । उसने दीवार पर से एक आना यों फेंक दिया कि वह रतन की झोंपड़ी में जा गिर पड़े ।

दूसरे दिन सुबह रतन की बीवी झाड़ू लगा रही थी, तो उसे वह आने का सिक्का दिखाई दिया । उसने उसे अपने पति के हाथ में देते हुए कहा – "सुनो जी, तुम कह रहे थे न – अगर एक आना पूँजी रहे तो मैं काफ़ी रुपये लाभ कमा लूँगा । यह लो एक आना ! एक आने में कोई व्यापार करता है ? तुम्हारी बहानाबाज़ी मैं समझ गई । कहते हो कि तुम में बुद्धि की कमी नहीं है । अब लो यह एक

रत्ना अय्या

आना, और दिखाओ तुम्हारी बुद्धि की करामात।"

रतन वह आना लेकर ज़मीनदार के पास पहुँचा और उसने कहा - "यह आने का सिक्का झाडू लगाते समय मिला है । यह ज़रूर आप ही का होगा । ले लीजिएगा ? मैं मेहनत की कमाई में विश्वास करता हूँ । अगर मैं यह आना ले लूँ तो एक तरह की चोरी ही है । "

ज़मीनदार ने सिक्का उलट-पलटकर देखा और कहा - "यह मेरा नहीं है, तुम्हें मिला तो इसे तुम्हारा ही समझो । "

रतन वह सिक्का लेकर शहर चला गया । वहाँ छोटे व्यापारियों को कर्ज़ देनेवाले महाजन थे । एक महाजन के पास जाकर रतन ने कहा - "सेठजी, यह एक आना ब्याज के रूप में पेशगी लेकर मुझे एक रुपया उधार देंगे ? शाम तक मैं आपका रुपया लौटा दूँगा । "

महाजन से एक रुपया लेकर रतन दूसरे महाजन के पास पहुँचा और उसको एक रुपया ब्याज पेशगी देकर दस रुपये उधार लिये । ये दस रुपये दूसरे दिन देने का आश्वासन दिया । तीसरे महाजन ने ब्याज के दस रुपये पहले लेकर रतन को सौ रुपये कर्ज़ दिया और दस्तावेज़ लिखवाया । सौ रुपये लेकर अब रतन एक बड़े महाजन के पास पहुँचा और प्रार्थना की - "महाशय, आप ये सौ रुपये ब्याज के रूप में स्वीकार कर लीजिए और मुझे हज़ार रुपये उधार दीजिए । मैं एक हफ़्ते भर में कर्ज़ा चुका दूँगा । " इस तरह अब उसके हाथ में एक हज़ार रुपये आनेवाले थे ।

महाजन ने रतन का नाम-धाम पूछा, उसके

मालिक ज़मीनदार का सारा विवरण जान लिया और फिर उचित दस्तावेज़ बनाकर रतन को एक हज़ार रुपये कर्ज़ दे दिया । उस रक़म को लेकर रतन ने सब से पहले अपना सौ, दस और एक रुपये का कर्ज़ चुका दिया और बचे रुपयों को लेकर घर लौटा । पत्नी को यह बची रक़म दिखाते हुए बोला - "अरी, देखती हो न ? एक आने से मैंने कितनी रकम पैदा की है ?" उसने पत्नी को सारा वृत्तान्त कह सुनाया ।

"यह कैसी कमाई ? महाजन को एक हज़ार रुपये चुकाने है न ? पूरे नौ सौ रुपये भी तुम्हारे पास कहाँ बचे हैं ?" पत्नी ने आश्चर्य से पूछा ।

रतन ने बीवी को समझाया - "अरी, व्यापार शुरू करूँगा तो इससे दुगुना लाभ होगा, समझी ? यह फायदा नहीं, मूल धन जो है !"

दूसरे दिन सुबह रुपया लेकर रतन ज्वार गाँव पहुँचा । वहाँ के किसान ज्वार पैदा करते हैं । फ़सलें काटने के लिए तैयार थीं । रतन ने सब किसानों को समझाया – "सुनो, इस साल मैं तुम्हारी सब पैदावर खरीद लूँगा । मैं इसी वक्त तुमको थोड़ी रक़म पेशगी देता हूँ । जब अनाज तैयार होगा, तो सारा का सारा मुझे या मेरे अधिकृत प्रतिनिधि को ही देना पड़ेगा । "

इस शर्त के अनुसार उसने प्रत्येक किसान को पचास, पच्चीस के हिसाब से पेशगी रक़में दीं और उनसे रसीदें लिखवाईं । उसने किसानों को आश्वस्त किया कि अनाज के सही दाम उन्हें चुकाए जाएँगे ।

अब रतन अपने घर लौट आया । अनाज के व्यापारियों को जब पता चला कि ज्वार की पैदावर खेतों ही में बिक गई, तो वे घबरा गये । उन्हें मालूम हुआ कि ज्वार गाँव की सब फ़सल अग्रिम खरीदनेवाला रतन है, तो व्यापारी ढूँढ़ते हुए रतन के पास पहुँचे । उन्होंने रतन से प्रार्थना की – "भैया, हमारे पेट काटोगे तो तुम्हें क्या लाभ होगा ? हम लोग पीढ़ी-दर-पीढ़ी यही व्यापार करते आ रहे हैं । तुम तो नये व्यापारी हो । इसलिए यह पैदावर हमारे लिए छोड़ सकते हो ?"

"भाइयों, यह सारी पैदावर मैं अकेला लेकर क्या करूँगा ? मुझे भी तो इसे अधिक दाम पर बेचना ही पड़ेगा । व्यापार के नियम आप सब लोग जानते ही हैं । मैंने जिस दर पर यह अनाज खरीदा है उससे अधिक मूल्य देकर आप यह सारा अनाज खरीद सकते हैं । " रतन ने ढंग से सब को समझाया ।

इस पर व्यापारियों ने आपस में परामर्श किया । उन लोगों ने अनाज का दर यों लगाया कि जिससे रतन को पूरे एक हज़ार का फायदा हो । रतन ने व्यापारियों से जो धन लिया, उसमें से महाजन के एक हज़ार रुपये पहले चुका दिये । बचे हुए एक हज़ार रुपयों में से एक छोटा खेत खरीद लिया, एक झोंपड़ी बनवा दी और अपने पत्नी व बच्चों के साथ सुखपूर्वक अपने दिन बिताने लगा । ज़मीनदार को यह देखकर बहुत प्रसन्नता हुई कि रतन ने जो बात कही, उसे साबित कर दिखाया ।
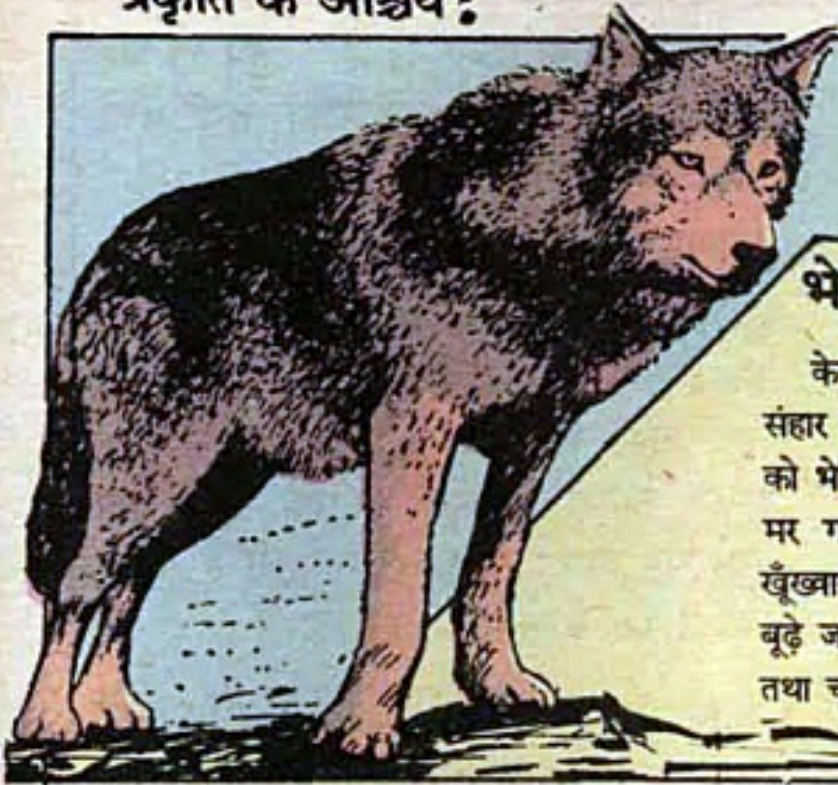
प्रकृति के आश्चर्य :
भेड़िये द्वारा मनुष्य का संहार!
केवल कनाडा में ही भेड़िये के द्वारा मनुष्य का संहार किये जाने की घटना दर्ज़ हुई है । एक शिकारी को भेड़िये ने काटा और वह रबीस नाम की व्याधि से मर गया । सब लोग जैसे समझते हैं, वैसे वह खूँख्वार किस्म का जानवर नहीं है । भेड़िया छोटे व बूढ़े जानवरों, बीमार जानवरों, और विशेषकर खरगोशों तथा चूहों को ही पकड़कर खा जाता है ।
अपूर्व ओलों की वर्षा!
सन् १९७० में अमेरिका के कानसारा काफ़ेविल्ले में जो ओलों की वर्षा हुई, उस समय १७.५ इंच परिधिवाले ओले गिरे थे ।
लन्दन नगर के क्यू गार्डन्स में स्थित सुप्रसिद्ध 'व्हिक्टोरिया' (निफिसी) जल-पौधा विश्व का सब से बडा माना जाता है । जल पर तैरनेवाले इस पौधे के पत्ते लगभग साढ़े छः फुट व्यास के होते हैं ।
विश्व का सब से बड़ा जलपौधा!

अपने शिशु को दीजिए सैरेलॅक का अनूठा लाभ

कीजिए ठोस आहार की आदर्श शुरूआत

४ महीने की उम्र से आपके शिशु को दूध के साथ-साथ ठोस आहार की भी ज़रूरत होती है. उसे सैरेलॅक का अनूठा लाभ दीजिए.

पौष्टिकता का लाभ : सैरेलॅक का प्रत्येक आहार आपके शिशु की आवश्यकता के अनुसार सारे पौष्टिक तत्व प्रदान करता है — प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, फैट, विटामिन तथा मिनरल. सभी पूरी तरह संतुलित.

स्वाद का लाभ : शिशुओं को सैरेलॅक का स्वाद बहुत भाता है.

समय का लाभ : सैरेलॅक पहले से ही पकाया हुआ है और इसमें दूध और चीनी मौजूद है. केवल इसे उबाले हुए गुनगुने पानी में मिला दीजिए.

पसंद का लाभ : तीन तरह के सैरेलॅक में से आप अपनी पसंद का चुन सकती हैं.

कृपया डिब्बे पर दिए गए निर्देशों का सावधानी से पालन कीजिए ताकि इसके बनाने में स्वच्छता रहे और आपके शिशु को संतुलित पोषाहार मिले.

मुफ़्त! सैरेलॅक बेबी केयर बुक
लिखिये : सैरेलॅक, पोस्ट बॉक्स नं. 3
नई दिल्ली-110 008

सैरेलॅक का वादा : स्वाद भरा संपूर्ण पोषाहार

फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार ५०)

पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ मई १९८९ के अंक में प्रकाशित की जायेंगी ।

Anant Desai

Anant Desai

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ एक शब्द या छोटे वाक्य में हों । ★ मार्च १० तक परिचयोक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिए । ★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) ५० रु. का पुरस्कार दिया जाएगा । ★ दोनों परिचयोक्तियाँ केवल कार्ड पर लिखकर निम्न पते पर भेजें : चन्दामामा फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता, मद्रास-२६

जनवरी के फोटो - परिणाम

प्रथम फोटो : सतर्क खरगोश !

द्वितीय फोटो : पढ़ने की कोशिश !!

प्रेषक : एस. चन्द्रशेखर, ६, नेहरू नगर, गंदग रोड, हुब्ली - ५८० ०२० (कर्नाटक)

Printed by B.V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., 188 N.S.K. Salai, Madras 600 026 (India) and Published by B. VISHWANATHA REDDI on behalf of CHANDAMAMA PUBLICATIONS, Chandamama Buildings, Vadapalani, Madras 600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.

Statement about ownership of CHANDAMAMA (Hindi)
Rule 8 (Form VI), Newspapers (Central) Rules, 1956

1. *Place of Publication*	'CHANDAMAMA BUILDINGS' 188, N.S.K. Salai Vadapalani, Madras-600 026
2. *Periodicity of Publication*	MONTHLY 1st of each calendar month
3. *Printer's Name*	B. V. REDDI
Nationality	INDIAN
Address	Prasad Process Private Limited 188, N.S.K. Salai Vadapalani, Madras-600 026
4. *Publisher's Name*	B. VISWANATHA REDDI
Nationality	INDIAN
Address	Chandamama Publications 188, N.S.K. Salai Vadapalani, Madras-600 026
5. *Editor's Name*	B. NAGI REDDI
Nationality	INDIAN
Address	'Chandamama Buildings' 188, N.S.K. Salai Vadapalani, Madras-600 026
6. *Name and Address of individuals who own the paper*	CHANDAMAMA PUBLICATIONS PARTNERS: 1. B. VENKATRAMA REDDY 2. B. V. SANJAY REDDY 3. B. V. NARESH REDDY 4. B. PADMAVATHI 5. B. VASUNDHARA 6. B. V. SHARATH REDDY 7. B. N. RAJESH 8. B. L. ARCHANA (Minor) 9. B. L. ARADHANA (Minor) (Minors admitted to the benefits of Partnership) 'Chandamama Buildings' 188, N.S.K. Salai Vadapalani, Madras-600 026

I, B. Viswanatha Reddi, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

1st March 1989

B. VISWANATHA REDDI
Signature of the Publisher

No share prices,
no political fortunes, yet...

Over 40% of Heritage readers are professionals or executives, 61% from households with a professional / executive as the chief wage earner. Half hold a postgraduate degree or a professional diploma.

– from an IMRB survey conducted in Oct. 1986

It's an unusual magazine. It has a vision for today and tomorrow.
It features ancient cities and contemporary fiction, culture and scientific developments, instead of filmstar interviews and political gossip. And it has found a growing readership, an IMRB survey reveals. Professionals, executives and their families are reading The Heritage in depth – 40% from cover to cover, 42% more than half the magazine.
More than 80% of The Heritage readers are reading an issue more than once.
And over 90% are slowly building their own Heritage collection.
Isn't it time you discovered why?

CMP-2155

So much in store, month after month.